मूल्य : ₹ १०

जून 2014

दादावाणी

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : ९ अंक : ८
अखंड क्रमांक : १०४
जून २०१४

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.
Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist-Gandhinagar.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अहंकार के हस्ताक्षर

संपादकीय

मनुष्य देह से जो कार्य होता है उसके दो विभाग हैं; स्थूल, जो बाह्यकरण है और सूक्ष्म, जो अंत:करण है। अंत:करण में मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार इस प्रकार चार चीज़ें हैं। अंत:करण में पार्लियामेन्टरी प्रणाली से कार्य होता है। जब संयोगी प्रमाण इकट्ठे होते हैं, तब मन विचार करने लगता है, चित्त तरह-तरह के पैम्फ्लट दिखाता है। बुद्धि निर्णय देती है। बुद्धि, चित्त या मन दोनों में से किसी एक की बात स्वीकार करके, उसके साथ मिल जाती है, तब फिर अहंकार हस्ताक्षर कर देता है। बिना अहंकार के तो कोई भी काम नहीं हो सकता।

जब तक अहंकार हस्ताक्षर नहीं करता, तब तक मृत्यु भी नहीं आती। वास्तव में तो, 'खुद' मरता ही नहीं है, अहंकार ही मरता है और वही जन्म लेता है। जन्म-मरण के चक्कर तो, जब तक अहंकार है, तब तक हैं। इसीलिए कहते हैं न कि जब तक अहंकार से मुक्त नहीं हो जाते, तब तक मोक्ष में नहीं जा सकते। और जब तक अज्ञानता है तभी तक अहंकार के हस्ताक्षर होते हैं। जिन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति हो गई है, उन्हें ज्ञान हस्ताक्षर नहीं करता। अज्ञानी रिलेटिव को रियल मानते हैं इसलिए रियल में (वास्तव में जो रिलेटिव उसमें) हस्ताक्षर हो जाते हैं। जबकि ज्ञान लेने के बाद, हस्ताक्षर रियल में नहीं, रिलेटिव में होते हैं और उसे डिस्चार्ज कहा।

अपने ज्ञान प्राप्त महात्माओं को तो ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध रहता है। हम ज्ञाता और अंत:करण ज्ञेय। अब जो अहंकार है, वह डिस्चार्ज है, उसे देखते रहना है। उदयकर्म तो रहेंगे लेकिन कर्मों की *निर्जरा* के समय खुद अहंकार रूपी नहीं हो जाता। लेकिन पूर्व के अध्यास के कारण, उसमें एकाकार हो गया, ऐसा प्रतीत होता है। उसमें एकाकार हो जाने से ही, डिस्चार्ज में हस्ताक्षर हो जाते हैं। लेकिन अब वहाँ जागृत रहना है अगर हस्ताक्षर नहीं करे तो फिर कर्मों की *निर्जरा* हो जाएगी। अब नए हस्ताक्षर नहीं होते हैं लेकिन कर्मों के उदय में तन्मयाकार हो जाने से हस्ताक्षर हो जाते हैं, इसलिए फिर वे *भोगवटा* देकर जाते हैं। डिस्चार्ज में हस्ताक्षर हो जाएँ और यदि उसके भी ज्ञाता रहें, तो असर मुक्त रह सकते हैं। ज्ञायक कभी ज्ञेय नहीं बन सकता। ज्ञान प्राप्ति के बाद दोनों अलग ही रहते हैं। लेकिन जागृति की कमी की वजह से अलग है ऐसा स्पष्टरूप से अनुभव नहीं हो पाता।

अब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, वे अपने धर्म में कार्यरत रहेंगे और हमें यानी शुद्धात्मा को अपने धर्म में रहना है। अपना धर्म ज्ञाता-दृष्टा। बस, देखो और जानो, हस्तक्षेप नहीं करना है। वास्तव में तो खुद हस्तक्षेप नहीं करता है, डिस्चार्ज अहंकार दखल करता है। अगर उसमें खुद के हस्ताक्षर नहीं हों, तो फिर वह दखल नहीं कहलाती। ज्ञाता-दृष्टा रहे तो दखल बंद हो जाएगी।

चित्रण तो *पुद्गल* करता है लेकिन यदि खुद उसमें तन्मयाकार हो जाए तो हस्ताक्षर कर देता है। लेकिन तन्मयाकार नहीं हो और जागृत रहकर चित्रण को देखे-जाने तो वह उस चित्रण से अलग ही है। जितना अलग रहा, ज्ञाता भाव में रहा, उतना उपयोग में रहा कहलाता है। जितना उपयोग में रहता है, उतना ही फिर एक-एक अंश बढ़ते-बढ़ते सर्वांश होता जाता है। और सर्वांश हो गया अर्थात् पूर्णाहुति।

ऐसा दृढ़ निश्चय तो है ही कि अब हमें पूर्णाहुति करनी ही है। लेकिन यह निश्चय परिणामलक्षी कब बन सकता है? जब सही अर्थों में पुरुषार्थ शुरू करें तब। स्वपुरुषार्थ से डिस्चार्ज अहंकार में हस्ताक्षर किए बगैर मुक्ति का आस्वाद का आनंद किस प्रकार लिया जा सकता है। उससे संबंधित अद्‌भुत विज्ञान यहाँ परम पूज्य दादाश्री की वाणी द्वारा बाहर आया है। जो हम सभी के लिए लक्ष्य प्राप्ति के पुरुषार्थ में सहायक बने यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अहंकार के हस्ताक्षर

कार्य का प्रेरक कौन?

सारी दुनिया जिस साइन्स की खोज में है, उस साइन्स का सर्व प्रथम संपूर्ण स्पष्टीकरण हम दे रहे हैं। मन को समझना मुश्किल है। मन क्या है? बुद्धि क्या है? चित्त क्या है? अहंकार क्या है? उन सभी का यथातथ्य स्पष्टीकरण हम देते हैं।

अंत:करण चार चीज़ों से बना हुआ है। १. मन २. बुद्धि ३. चित्त और ४. अहंकार।

चारों रूपी हैं और पढ़े जा सकते हैं। चक्षुगम्य नहीं हैं, ज्ञानगम्य हैं। कम्पलीट फिज़िकल हैं। शुद्ध आत्मा का और उनका कोई लेना-देना नहीं है। वे पूर्णतया अलग ही हैं। हम पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं, इसलिए उनका असल वर्णन कर सकते हैं।

हरएक का फंक्शन (कार्य) अलग-अलग होता है फिर भी प्रत्येक कार्य चारों के सहयोग से ही संपन्न होता है। मनुष्य देह जिस आधार पर कार्य करती है उसके दो विभाग हैं :- (१) स्थूल - बाह्य विभाग, जिसे बाह्यकरण कहते हैं। (२) सूक्ष्म - अंदर का विभाग, जिसे अंत:करण कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : कार्य करने की प्रेरणा कौन देता है?

दादाश्री : अंत:करण के अनुसार बाह्यकरण बनता है। कोई प्रेरक है ही नहीं। जो-जो परमाणु इकट्ठे किए हैं, वैसे विचार छप जाते हैं, और वे ही परमाणु उदय में आते हैं। यदि खुद ही सोच सकते तो मनचाहे विचार ही आते, लेकिन जैसे परमाणु भरे हैं, वैसे निकलते हैं। विचार संयोगों के अधीन है।

पहला फोटो, अंत:करण में

किसी भी कार्य का सबसे पहला फोटो, पहली छाप एक्ज़ेक्ट अंत:करण में पड़ता है। और फिर वही बाह्यकरण में तथा बाह्य जगत् में रूपक में आता है।

अगर मनुष्य को अंत:करण में देखना आ जाए तो वह इंसान को पता चल जाता है कि बाह्यकरण में क्या होगा। उसका पहले से ही पता चल जाता है कि ऐसा होगा।

वास्तव में बाह्यकरण बाधक नहीं है, बल्कि अतं:करण बाधक है।

पार्लियामेन्टरी प्रणाली अंत:करण में

अंत:करण में 'पार्लियामेन्टरी' पद्धति है। उसके चार 'मेम्बर्स' हैं। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार। जब संयोगी प्रमाण इकट्ठे होते हैं, तब मन विचार करता है। विचार जहाँ से आते हैं, वह मन है। शरीर में से जो कभी भी बाहर नहीं निकलता, वह मन है। मन को समझना बहुत मुश्किल है। मन तो अंदर बहुत ही उछल-कूद करता है। भाँति-भाँति के पैम्फलेट्स दिखलाता है। मन का स्वभाव भटकना नहीं है। लोग, जो ऐसा कहते हैं कि, 'मेरा मन भटकता है,' वह गलत है। जो भटकता है, वह चित्त है। सिर्फ चित्त ही इस

शरीर से बाहर जा सकता है। वह ज्यों की त्यों तसवीरें खींचता है। उसे देख सकते हैं। चित्त, जब बाहर का कार्य होता है तब बाहर जाता है और अंदर का कार्य हो तब अंदर पहुँच जाता है। बुद्धि सलाह देती है और डिसिज़न (निर्णय) बुद्धि लेती है। फिर बुद्धि, चित्त या मन दोनों में से किसी एक की बात को एक्सेप्ट करती है और उसके साथ एक हो जाती है, और फिर अहंकार उसमें हस्ताक्षर कर देता है। मन, बुद्धि और चित्त, इन तीनों की सौदेबाज़ी चलती है। बुद्धि इन दोनों में से जिसके साथ भी मिल जाती है, चित्त के साथ या मन के साथ, उसमें अहंकार हस्ताक्षर कर देता है।

यदि मन और बुद्धि एक हो गए तो अहंकार को स्वीकृति देनी ही पड़ती है। चित्त और बुद्धि एक हो गए तो भी अहंकार को स्वीकृति देनी ही पड़ती है। यानी जिसके पक्ष में तीनों गए उसकी बात मान्य होती है। ये संपूर्ण तत्वज्ञान की बातें हैं। परन्तु वह आपको आपकी बुद्धि से समझ में आना चाहिए।

हस्ताक्षर किस तरह होते हैं?

उदाहरण के तौर पर आप शांताक्रुज़ में बैठे हों और अंदर मन पैम्फ्लट दिखाए कि दादर जाना है। तो चित्त तुरंत ही दादर पहुँच जाएगा और दादर का तादृश फोटो यहीं बैठे-बैठे दिखाएगा। फिर मन दूसरा पैम्फ्लट दिखाएगा कि चलो बस से जाएँ, तब चित्त बस देख आएगा। फिर वापस मन तीसरा पैम्फ्लट दिखाएगा कि 'नहीं, बस के बजाय टैक्सी लेकर जाएँ तो हम सभी साथ में बैठकर जा पाएँगे।' टैक्सी में ही जाना है। फिर चौथा पैम्फलट बताएगा कि ट्रेन में जाएँ। उस समय मन बहुत विचारणा में होता है। यानी कि मन इधर से ऐसे सोचता है, वहाँ से वैसे सोचता है, सबकुछ सोच लेता है कि ऐसा ऐसा करूँगा।

तब चित्त ट्रेन, टैक्सी, बस सभी देख आता है, उसके बाद चित्त बार-बार टैक्सी दिखाता रहेगा। अंत में बुद्धि डिसिज़न लेगी कि टैक्सी में ही जाना है। अहंकार इन्डिया के प्रेसिडेन्ट (भारत के राष्ट्रपति) की तरह हस्ताक्षर कर देगा, और तुरंत ही कार्य हो जाएगा, और आप टैक्सी के लिए खड़े हो जाएँगे। जैसे ही बुद्धि ने अपना डिसिज़न दिया कि तुरंत मन पैम्फलट दिखाना बंद कर देगा। फिर दूसरे विषय का पैम्फलट दिखाएगा।

बुद्धि जो डिसिज़न देती है, उस पर इगोइज़म (अहंकार) सिर्फ हस्ताक्षर ही करता है। वह और कुछ नहीं करता। जहाँ-जहाँ बुद्धि डिसिज़न देती है वहाँ-वहाँ उसे अहंकार करना है। वही उसका धंधा है। अहंकार हस्ताक्षर कर देता है। जहाँ चित्त कहे, वहाँ वह हस्ताक्षर नहीं करता। अरे, मन कहे तब भी हस्ताक्षर नहीं करता, लेकिन जहाँ पर बुद्धि कहे वहाँ पर इगोइज़म हस्ताक्षर कर देता है। यानी कि यह मन जो कहता है न उस पर बुद्धि हस्ताक्षर करवाती है। और जब मन, बुद्धि और अहंकार एक हो जाते हैं, तब वह कार्य होता है। अर्थात् सिर्फ मन ही चीज़ नहीं है।

अहंकार किसके अधीन?

अहंकार किसके ताबे में है? बुद्धि के ताबे में। यानी जैसा बुद्धि कहे अहंकार वैसा ही करता रहता है। बुद्धि कहे कि 'यहाँ हस्ताक्षर करो,' तो कर देता है। बुद्धि की आँखों से बेचारा हस्ताक्षर करता है, लेकिन रौब तो उसी का है। *चलण* (वर्चस्व) बुद्धि का और रौब इसका! हस्ताक्षर इसके होते हैं! जैसे प्रेसिडेन्ट ऑफ इन्डिया (राष्ट्रपति) हो! अहंकार बड़ा है और बुद्धि उसकी असिस्टेन्ट (सहायक) होने के बावजूद प्रधानमंत्री की तरह काम कर रही है। अब बुद्धि जो कर रही है, उसी के आधार पर चल रहा है। जहाँ पर बुद्धि होगी वहाँ पर अहंकार होगा ही। जहाँ मन है, वहाँ पर अहंकार हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता।

बुद्धि एकाकार हो जाए वहाँ अहंकार के हस्ताक्षर

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और अहंकार, दोनों का सम्मिलित डिसिज़न होता है। यदि वह मन में एकाकार हो जाए तो मन का कार्य होता है और चित्त में एकाकार हो जाए तो चित्त का काम होता है, ऐसा हुआ न?

दादाश्री : हाँ, चारों में से यदि तीन इकट्ठे हो जाए न, तो कार्य हो जाता है। कभी यदि रात को जाग जाए तो मन को संयोगी प्रमाण मिल जाए तो मन उस घड़ी विचारणा में पड़ जाता है। यह जो संयोगी प्रमाण आ मिला, तो उसका टाइमिंग मिलना बाकी था, लेकिन जैसे ही वह मिला कि फूटा। अत: आपको उस तरह के विचार आते रहते हैं लेकिन उस घड़ी व्यवसाय के विचार नहीं आते, लेकिन जिस तरह का संयोगी प्रमाण हो, उस तरह के विचार आते हैं, वह मन कहलाता है। और मन जिस घड़ी शुरू हो जाता है, यदि वह बाहर के बारे में हो तो फिर चित्त वहाँ पर जाता है और घर के बारे में हो तो घर में नीचे जाता है, ऊपर जाता है, चित्त उस घड़ी घूमता रहता है। तब बुद्धि डिसिज़न देने की तैयारी करती है। अब अगर चित्त उसमें खड़ा नहीं रहे, चित्त विरोधी हो जाए, तो बुद्धि मन के साथ मिल जाती है। मन के विचार और बुद्धि एक हो जाएँ तो अहंकार हस्ताक्षर कर देता है। बुद्धि जिसके साथ मिल जाती है, वहाँ अहंकार हस्ताक्षर कर देता है। इस तरह पार्लियामेन्ट है चारों की! उसमें से यदि सिर्फ चित्त खिसक जाए तो उसका विरोध करके, काम आगे चलता रहता है। अहंकार तो सिर्फ, जहाँ पर बुद्धि कहती है वहाँ हस्ताक्षर कर देता है, ऐसा उसका नियम है। या फिर कभी-कभार चित्त को पसंद आ जाए कि 'ये यात्रा मुझे बहुत अच्छी लगी,' और बुद्धि यदि उसके साथ मिल जाए, बुद्धि एक्सेप्ट करे तो फिर डिसाइड कर लेता है। अत: फिर तीनों एक तरफ हो जाते हैं और मन अकेला रह जाता है।

बुद्धि और अहंकार का संबंध

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और अहंकार दोनों का संबंध किस प्रकार का है?

दादाश्री : बुद्धि और अहंकार, उन दोनों में संबंध है, रिलेशन है। अहंकार प्रेसिडेन्ट के तौर पर हो और बुद्धि प्रधानमंत्री के तौर पर हो, इस तरह से हैं ये। तो प्रधानमंत्री जितना कहे उतने पर प्रेसिडेन्ट को हस्ताक्षर कर देने पड़ते हैं। प्रधानमंत्री जैसे नचाए वैसे नाचना पड़ता है। यानी कि अहंकार अंधा है, उसकी आँखे नहीं है, यह कैसे पता चलता है? तब कहे, यदि लोभ में पड़े तो लोभांध कहलाता है, मान में पड़े तो मानांध कहलाता है। वह जिस-जिस में पड़े, उसका वह अंध कहलाता है। मूलत: खुद ही अंध है। बिना अहंकार के तो बुद्धि खड़ी ही नहीं रहती न! बुद्धि से स्वतंत्र रूप से काम नहीं हो सकता। वह तो हस्ताक्षर करवा लेने के बाद ही काम करती है। यह पार्लियामेन्टरी पद्धति है। बिना अहंकार के तो कोई कार्य होगा ही नहीं न!

बुद्धि + मन की बात पर अहंकार हस्ताक्षर करेगा या बुद्धि + चित्त की बात पर अहंकार हस्ताक्षर करेगा। मन और चित्त में बुद्धि तो कॉमन रूप से रहती है, क्योंकि बगैर बुद्धि के किसी भी कार्य का डिसिज़न नहीं आता और डिसिज़न आने पर अहंकार हस्ताक्षर कर देता है और कार्य होता है। अहंकार के बगैर तो कोई काम ही नहीं हो सकता, पानी पीने के लिए भी नहीं उठा जा सकता।

अहंकार तो बड़ा प्रेसिडेन्ट कहलाता है। मन के कहे अनुसार करवाना हो तो वह अहंकार से हस्ताक्षर करवाने पर ही हो पाता है। हिन्दुस्तान में राष्ट्रपति होते हैं न, वैसा ही। उसी का साम्राज्य है। प्रधानमंत्री उनके बहुत काम करते हैं। भगवान की भक्ति भी वह करवाता है और झगड़े-फसाद भी करवाता है। धर्म हो पाता है, वह भी अहंकार से।

कार्य नहीं हो पाता, बिना (डिस्चार्ज) अहंकार के

प्रश्नकर्ता : अहंकार हमेशा अवरोध डालनेवाला होता है या उपयोगी भी है?

दादाश्री : अहंकार के बिना तो इस दुनिया में ये बातें भी नहीं लिखी जा सकतीं। चिट्ठी भी लिखनी हो न तो वह भी अहंकार की अनुपस्थिति में नहीं लिखी जा सकती। अहंकार दो प्रकार के हैं। एक डिस्चार्ज होता (मुर्दा या मृतवत) अहंकार, जो लट्टू जैसा है। और दूसरा चार्ज होता (जीवित) अहंकार, जो शूरवीर जैसा है। जो लड़ाई भी करता है, झगड़ा करता है, सबकुछ करता है। और उस बेचारे के हाथ में कुछ भी नहीं है, लट्टू की तरह घूमता रहता है। अत: बिना अहंकार के तो दुनिया में कुछ भी नहीं हो पाता। लेकिन वह अहंकार डिस्चार्ज होता अहंकार है। आपको परेशान नहीं करता। बिना अहंकार के तो कार्य ही नहीं हो सकता। हम बोलते ज़रूर हैं कि 'मैं संडास हो आया। मुझे संडास जाना है।' अहंकार हस्ताक्षर करे तभी वह कार्य होता है, वर्ना कार्य नहीं होता।

अधिक मतों से पार्लियामेन्टरी डिसिज़न

प्रश्नकर्ता : अंत:करण में मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार हैं। इनमें अहंकार प्रेसिडेन्ट है, तो फिर वह मन का बाप है, ऐसा नहीं कहा जाएगा?

दादाश्री : नहीं, जब मन ऊब जाए, तब अहंकार को अच्छा नहीं लगता। इन में कोई किसी का प्रेसिडेन्ट नहीं है! हाँ! ये *चलण* कर्मों के ही है। बिना इच्छा के हस्ताक्षर हो जाते हैं। सभी मेम्बर आ गए, पार्लियामेन्ट की मीटिंग करके फिर उसके हस्ताक्षर हो जाते हैं। हस्ताक्षर तो सिर्फ नाम के उसके होते हैं, मन के नहीं होते। वह मन का *ऊपरी* (बॉस) नहीं है। मन तो सुनता ही नहीं है किसी की भी। चित्त की भी नहीं सुनता। बुद्धि की भी नहीं सुनता। लेकिन जब पार्लियामेन्ट बैठती है तब वोटिंग होती है, डिसिज़न आता है तब फिर चुप हो जाता है। फिर मन नहीं बोल सकता।

अत: इस प्रकार अंदर यों तो सभी बातें चल रही होती हैं, लेकिन किसी भी चीज़ का डिसिज़न आता है तो वह पार्लियामेन्टरी डिसिज़न होता है। अंत:करण अर्थात् पार्लियामेन्ट पद्धति! मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, चारों मेम्बरों की अंदर पार्लियामेन्ट मीटिंग होती है। इन चारों में से मेजोरिटी के मत से कार्य होगा। उसमें प्रेसिडेन्ट अहंकार है, बुद्धि प्रधानमंत्री है और बाकी के दो, वोट देनेवाले हैं।

मन और चित्त, ये दो बचे। इन दोनों में से किसी एक का पक्ष लेती है यह बुद्धि। उसे ठीक लगे तो मन का पक्ष लेती है, तब चित्त को हटा देती है और चित्त के पक्ष में पड़े तो मन को हटा देती है, और ये दोनों सहसा एक हो जाते हैं। जिसके साथ बुद्धि एक हो जाती है, वहाँ पर साथ में अहंकार होता ही है। इससे वोटिंग बढ़ जाती है न? फिर एक तरफ एक रहा और दूसरी तरफ तीन हो गए, जहाँ पर तीन हो गए, उसी का कार्य होगा अंदर। इस अनुसार होता रहेगा।

बुद्धि का काम क्या?

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्टली (वास्तव में) बुद्धि क्या करती है?

दादाश्री : एक्ज़ेक्टली अगर बुद्धि का मीनींग देखने जाएँ तो निर्णय देने के सिवाय और कोई भी काम नहीं करती।

प्रश्नकर्ता : यानी कि डिसिज़न (निर्णय) बुद्धि ही लेती है?

दादाश्री : हाँ, डिसिज़न बुद्धि लेती है। दो प्रकार के डिसिज़न। एक, मोक्ष में जाने का डिसीज़न प्रज्ञा लेती है और संसार का डिसिज़न अज्ञा लेती

है। अज्ञा अर्थात् बुद्धि। अज्ञा-प्रज्ञा के डिसिज़न हैं ये सभी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन बुद्धि परिणाम को देख सकती है न?

दादाश्री : हाँ, हाँ, परिणाम को देख सकती है। वह देख सकती है इसीलिए बुद्धि कहलाती है न! और निर्णय व निश्चय ले सकती है कि 'नहीं, ऐसा ही करना है।' अत: बुद्धि देख सकती है। लेकिन देखने के बजाय बुद्धि काम ज़्यादा करती है, निर्णय करती है कि ऐसा करना है या नहीं। वह 'यस' (हाँ) कहे तभी सबका काम होता है।

अर्थात् बुद्धि क्या काम करती है? सिर्फ डिसिज़न देती है कि भाई, ऐसे काम कर ही डालो। और फिर यह बुद्धि कर्मानुसारीणी भी है। अंत में यदि आपके पाप का उदय होगा तो बुद्धि जो डिसिज़न देगी न, तो वह ऐसा देगी कि उससे आपका नुकसान होगा। और पुण्य का उदय आएगा तो बुद्धि जो डिसिज़न देगी, वह लाभदायक होगा। वे उदय, आपके पाप और पुण्य चलाते हैं। और कोई भगवान भी इसे चलानेवाले नहीं हैं। ये तो पुण्य और पाप का फल है। 'व्यवस्थित शक्ति' जो मैं कहता हूँ न, वही यह फल देती रहती है।

डिसिज़न बुद्धि का, हस्ताक्षर अहंकार के

लोग बुद्धि को, बुद्धि की तरह नहीं समझते और सब गड़बड़ कर देते हैं। जो डिसिज़न देती है, वह बुद्धि है। कोई व्यक्ति, जो यदि जल्दी से डिसिज़न देता हो तो, समझना कि यह बहुत बड़ा बुद्धिशाली है। किसी भी स्टेज में, भले ही अभी लाख केस आए हों, तो उन सभी के तुरंत डिसिज़न दे दे, तो समझना कि यह सबसे बड़ा बुद्धिशाली है और यदि उलझन में पड़ जाए तो समझना कि बुद्धि कम है।

यहाँ तो लोगों ने क्या समझ रखा है कि जिसे तरह-तरह की युक्तियाँ वगैरह आती हों न, उसे लोग ज़्यादा बुद्धिशाली मानते हैं। नहीं है वह बुद्धि! बुद्धि तो हमेशा निर्णय ही करती रहती है। जो तुरंत निर्णय ले, उसे बुद्धिशाली कहते हैं, फिर भले ही उसे एक भी ट्रिक नहीं आती हो। अत: बुद्धि को तो ये लोग समझे ही नहीं है! इसलिए शास्त्रकारों ने कहा कि बुद्धि का काम क्या है? तो वह है डिसाइड (निर्णय) लेना। चौकस (पक्का) डिसिज़न ले लेना। किसी भी तरह के प्रश्न उठ रहे हों, लेकिन डिसिज़न लेना वह बुद्धि का काम और अहंकार के हस्ताक्षर।

हस्ताक्षर अहंकार के, *चलण* बुद्धि का

बुद्धि प्रकाशवाली है और बुद्धि जहाँ दौड़ती है न, अहंकार वहाँ पर तुरंत पहुँच जाता है। क्योंकि अहंकार खुद अंधा है, इसलिए बुद्धि के बिना उसका चले ऐसा नहीं है। वह बुद्धि की आँखों से ही देखता रहता है। सिर्फ प्रेसिडेन्ट कहलाता है इतना ही, बाकी सत्ता सारी बुद्धि के हाथ में है। और मन का, किसी का नहीं चलता। जहाँ बुद्धि है न, वहाँ किसी का नहीं चलता।

बुद्धि क्या है? वह तो पिछले जन्म का आपका व्यू पोइन्ट है। जैसे आप हाई वे पर से गुज़र रहे हो और पहले मील पर एक प्रकार का व्यू पोइन्ट दिखाई दिया, तो इस पर बुद्धि के हस्ताक्षर हो जाते हैं कि हमें भी ऐसा ही हो तो ठीक रहेगा। इस प्रकार पहले मील का व्यू पोइन्ट तय हो जाता है। फिर आगे बढ़ने पर दूसरे मील पर अलग ही दृश्य दिखाई देता है और सारा का सारा व्यू पोइन्ट ही बदल जाता है, तब उसके हिसाब से बुद्धि फिर हस्ताक्षर कर देती है कि हमें ऐसा ही चाहिए, लेकिन इससे पिछला व्यू पोइन्ट भूल गया ऐसा नहीं है इसलिए वह आगे का आगे ही चलता रहता है। यदि पिछले व्यू पोइन्ट का अभिप्राय नहीं लें, तो हर्ज नहीं है, लेकिन ऐसा होना संभव नहीं है।

अभिप्राय आकर आगे खड़ा हो ही जाता है। इसे हम गत ज्ञान-दर्शन कहते हैं। क्योंकि बुद्धि ने हस्ताक्षर करके मुहर लगा दी है, इसलिए अंदर मतांतर होता ही रहता है। आज की आपकी बुद्धि आपके पिछले जन्म का आपका व्यू पोइन्ट है और आज का व्यू पोइन्ट आपके अगले जन्म की बुद्धि होगी, ऐसे परंपरा चलती ही रहती है।

मन और चित्त के साथ मिलकर बुद्धि जो डिसीज़न देती है, उसमें आख़िर में हस्ताक्षर करे, वह अहंकार है। जब तक अहंकार के हस्ताक्षर नहीं होते, तब तक कोई कार्य होता ही नहीं। लेकिन बुद्धि वह अहंकार के माध्यम से आनेवाला प्रकाश होने के कारण बुद्धि के डिसीज़न लेने पर अहंकार नियम से ही सहमत हो जाता है और कार्य हो जाता है।

डिसिज़न तभी रूपक में आए

प्रश्नकर्ता : जब तक अहंकार के हस्ताक्षर नहीं लें, तब तक क्या होगा?

दादाश्री : काम बंद रहेगा। वैसे तो अहंकार का *चलण* नहीं है और उसके हस्ताक्षर के बगैर चलता भी नहीं।

जिसने निर्णय दे दिया वह काम बुद्धि का। इसलिए फिर वे सभी चुप। मन निर्णय नहीं दे सकता, चित्त निर्णय नहीं दे सकता, अहंकार भी निर्णय नहीं दे सकता।

मन और चित्त के साथ मिलकर बुद्धि जो डिसिज़न देती है, उस पर अंत में जो हस्ताक्षर कर देता है, वह है अहंकार। जब तक अहंकार हस्ताक्षर नहीं कर दे तब तक कोई कार्य हो ही नहीं सकता। लेकिन क्योंकि बुद्धि अहंकार के थ्रू आनेवाला प्रकाश है इसलिए जब बुद्धि डिसिज़न लेती है तब अहंकार नियम से ही उसमें एकाकार हो जाता है और कार्य हो जाता है।

बुद्धि 'डिसिज़न' लेती है। यद्यपि डिसिज़न लेना वह बुद्धि का स्वतंत्र धर्म नहीं है। बुद्धि 'डिसाइड' करे और अहंकार उस पर हस्ताक्षर करे तभी वह पूरा होता है। अहंकार के हस्ताक्षर के बिना 'डिसिज़न' रूपक में आता ही नहीं।

बिना हस्ताक्षर के मृत्यु भी नहीं आती

ऐसा है, कि व्यक्ति मरता है न, उसके लिए भी खुद हस्ताक्षर कर देता है। वर्ना ऐसे ही कोई नहीं नहीं लेता, क्योंकि कोई बाप भी आपका मालिक नहीं है। आपके मालिक आप खुद ही हो। इसलिए आपके हस्ताक्षर ले लेते हैं। सिग्नेचर वगैरह ले लेने के बाद ही लेने आते हैं। वर्ना बिना सिग्नेचर के यदि लेने आ गया तो, आप उसे मारोगे कि तु किस अधिकार से यहाँ लेने आया है? लेकिन वह हस्ताक्षर कर दिए इसलिए फिर अपना कुछ नहीं चलता।

तब लोग कहते हैं कि, 'हम ऐसे कच्चे नहीं है कि हस्ताक्षर कर देंगे।' अरे! उस समय तुझे इतना दर्द होगा, इतना दर्द होगा कि तू कहेगा कि 'भाई साहब अब जल्दी छूट जाएँ तो अच्छा है, ऐसा वह खुद ही कहेगा। और ऐसा कहते ही हस्ताक्षर हो गए! और हस्ताक्षर हो गया, मतलब थोड़े दिन का मेहमान! लेकिन अपने लोग हस्ताक्षर करने के बाद भी पलट जाते हैं कि 'नहीं, नहीं जाना है।'

जन्म-मरण अहंकार का ही

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के समय मन हस्ताक्षर कर दे तभी मरण होता है न?

दादाश्री : मन हस्ताक्षर नहीं करता, बल्कि अहंकार करता है। मन को कोई अधिकार ही नहीं है। पूरा अधिकार अहंकार को ही है और वह भी अहंकार के हाथ में नहीं है। अहंकार को बुद्धि जैसा बताए, वैसा करता है। अहंकार स्वभाव से अंधा है

और बुद्धि देखती है। वह बुद्धि से पूछता है कि तू क्या कहती है? लेकिन बुद्धि का चलता नहीं है, बुद्धि के पास सत्ता नहीं है और अहंकार के हस्ताक्षर ज़रूरी हैं। इस तरह की अब उलझनें हैं अंदर। मतलब अहंकार हस्ताक्षर कर दे, उसके बाद ही नियमराज लेने आते हैं, वर्ना नियमराज भी लेने नहीं आते। कोई मालिक नहीं है। आप खुद ही *ऊपरी,* तो फिर लेने आनेवाला तू कौन?

लोग परसत्ता में हस्ताक्षर कर देते हैं, इसी कारण वे लोग हमेशा भय में रहते हैं।

वास्तव में 'खुद' मरता ही नहीं है। अहंकार ही मरता है और अहंकार ही जन्म लेता है। जब तक अहंकार हस्ताक्षर नहीं कर दे, तब तक मृत्यु आ ही नहीं सकती। लेकिन अभागा हस्ताक्षर किए बगैर रहता ही नहीं! जब बिस्तर में पड़े-पड़े दर्द से बहुत कराहता है या फिर बहुत ज़्यादा दुःख आ पड़े, तब हस्ताक्षर कर ही देता है कि 'इससे तो मरना अच्छा है' हस्ताक्षर हो ही जाते हैं।

योजना पहले की, हस्ताक्षर इस जन्म में

प्रश्नकर्ता : हस्ताक्षर नहीं करे तो मौत नहीं आएगी न?

दादाश्री : हस्ताक्षर नहीं करेगा तो मौत नहीं आएगी। ये सब हस्ताक्षर कर देते होंगे या नहीं?

प्रश्नकर्ता : एक्सिडेन्ट से जो मर जाते हैं, वे तो कहाँ से हस्ताक्षर करेंगे?

दादाश्री : उसने भी हस्ताक्षर किए हुए होते हैं। हस्ताक्षर किए बिना तो कभी मरा ही नहीं जा सकता। उसके बिना तो मरने का अधिकार ही नहीं है। मृत्यु तो आपकी मालिकी की है, उसमें और किसी की दख़ल नहीं होती। और एक बार आपके हस्ताक्षर हो गए फिर आपका नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : एक्सीडेन्ट हुआ और टकराया तो?

दादाश्री : तब भी बिना हस्ताक्षर किए नहीं मरता।

प्रश्नकर्ता : वह तो पाँच-छः सेकन्डों में चला जाता है।

दादाश्री : नहीं, पहली सेकन्ड में ही वह तुरंत कहता है 'हाय बाप रे! छूट जाएँ तो अच्छा। मैं तो मर गया।' अरे, 'मैं तो मर गया,' ऐसा कहता भी है! 'गया, गया' कहता है।

अर्थात् हस्ताक्षर के बिना, एकदम से कुछ हो ही नहीं सकता। क्योंकि मालिक नहीं है कोई आपका। मालिक तो...बिना हस्ताक्षर के ऐसा कैसे हो सकता है? बिना हस्ताक्षर के जन्म नहीं हुआ है। अब लोगों को ये बात कैसे समझ में आए?

प्रश्नकर्ता : अगर हस्ताक्षर नहीं करे तो क्या होगा?

दादाश्री : कोई लेकर ही नहीं जाएगा न! अगर ऐसी समझ हो तो नहीं लेगा। (करेगा न)

प्रश्नकर्ता : इसी जन्म में हस्ताक्षर कर दिए होते हैं या पिछले जन्म में?

दादाश्री : इस जन्म में ही हस्ताक्षर कर दिए होते हैं। पिछले जन्म में तो उसका, योजना के रूप में होता है, लेकिन रूपक में तो इसी जन्म में आता है।

जन्म-मरण हस्ताक्षर सहित ही

प्रश्नकर्ता : जन्म लेकर तुरंत मर जाते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : उन सबके भाव तो अंदर हो ही जाते हैं, अंदर उसका हिसाब हो ही जाता है। हिसाब हुए बगैर कहीं मृत्यु नहीं आती। अचानक कुछ भी नहीं आता। सब इन्सिडेन्ट हैं, एक्सिडेन्ट नहीं होते।

हार्ट अटेक आए तब बहुत दर्द होता है, उस घड़ी एक थोड़ा सा ऐसा भाव हो जाता है कि, 'मुक्त हो जाएँ तो अच्छा', और फिर जब अंदर ज़रा शांत पड़े तब बोलता है, 'डॉक्टर मुझे ठीक कर दो, हाँ! डॉक्टर, मुझे ठीक कर दो!' अरे, लेकिन हस्ताक्षर कर दिए थे वहाँ पर तो? मृत्यु से पहले क्यों नहीं सोचता?

लेकिन कुदरत का नियम ऐसा है कि किसी भी इंसान को यहाँ से ले जाया नहीं जा सकता, मरनेवाले के हस्ताक्षर के बिना उसे यहाँ से नहीं ले जाया जा सकता। लोग हस्ताक्षर करते होंगे क्या? ऐसा कहते हैं न कि, 'भगवान, यहाँ से चला जाऊँ तो अच्छा।' अब वह ऐसा क्यों बोलता है? वह आप जानते हो? भीतर कोई ऐसा दु:ख होने लगे, तो फिर दु:ख के मारे बोलता है कि, 'अब यह देह छूटे तो अच्छा।' उस घड़ी हस्ताक्षर कर देता है और वापस सुबह जब ठीक हो जाता है तब हम कहें कि, 'चाचा, रात को तो आप कह रहे थे न कि यहाँ से चला जाऊँ तो अच्छा।' तब वे कहते हैं कि, 'नहीं, लेकिन अब अच्छा है।' देखो! रात को हस्ताक्षर कर दिए और सुबह फिर पलट गए न चाचा? जब हस्ताक्षर कर दिए तभी से मैं समझ गया कि इनका अब दस या पंद्रह दिनों का ही मुकाम है। हस्ताक्षर के बिना तो किसी को भी नहीं ले जा सकते। ये जितने जीव मरे हैं न वे सभी हस्ताक्षर सहित मरते हैं। वर्ना ये लोग तो दावा करेंगे कि, 'मेरे हस्ताक्षर के बिना आप क्यों ले गए?' ये लोग बाद में अर्ज़ी नहीं देते? और यह सरकार भी कहती है, 'हस्ताक्षर के बिना किसी को कुछ बेचना-करना नहीं, यदि बेचोगे तो आपकी ज़िम्मेदारी।' हस्ताक्षर कर दे तो कोई कुछ नहीं कह सकता। वर्ना हस्ताक्षर के बिना तो ये लोग टेढ़ा बोलेंगे क्योंकि मूलत: स्वभाव तो टेढ़ा ही है न!

प्रश्नकर्ता : हस्ताक्षर करने के बाद फिर कहे कि नहीं, अभी तो जीना है। तो क्या वे हस्ताक्षर रहते हैं, मिट नहीं जाते?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं चलता। लेकिन हस्ताक्षर कर दिए मतलब हो गया। हस्ताक्षर करने के बाद ऑर्डर हो जाता है कि अब ले जाओ।

प्रश्नकर्ता : यदि बाद में कोई प्रतिक्रमण कर ले तो?

दादाश्री : कुछ भी नहीं।

प्रश्नकर्ता : बदल नहीं सकता?

दादाश्री : हस्ताक्षर क्यों किए? वही सबसे बड़ा कारण है। लोग जानते नहीं है कि कैसे मैं खुद से हस्ताक्षर से जाता हूँ! मैं जाऊँगा, लेकिन जब हस्ताक्षर कर दूँगा तभी न!'

जब तक आज्ञान है, तब तक हस्ताक्षर

प्रश्नकर्ता : मुझे जानना है कि जो लोग अहंकार निकाल देने का दावा करते हैं, उनकी मृत्यु तो होनी ही नहीं चाहिए न?

दादाश्री : किसी भी देहधारी की मृत्यु तो हुए बगैर रहती ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : यदि अहंकार के हस्ताक्षर के बगैर मृत्यु नहीं होती, तो जिनका अहंकार खत्म हो गया है उनका क्या?

दादाश्री : जब अहंकार ही नहीं है तो फिर हस्ताक्षर करने की ज़रूरत ही नहीं रही न? उनके लिए तो, जब उनका देह गिर पड़े तब गिर पड़े, वही सही है। भले ही बिना मालिक का घर, लेकिन फिर गिर ही पड़ता है, वह तो रहता ही नहीं है। खड़ा ही नहीं रहता। यह तो जिन्हें भ्रांति है, उनके लिए अहंकार हस्ताक्षर कर दे, तभी देह छूटती है और जिसमें अहंकार है ही नहीं वह मुक्त ही है। देह को जब भी खत्म हो जाना हो तब हो जाए।

जिन्हें ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है, उनके पास हस्ताक्षर करवाता है। खुद जिसे अब जीना-मरना रहा ही नहीं, खुद अलग है और एक तरफ देह अलग है, उसे अब हस्ताक्षर करने की ज़रूरत नहीं रही। आपको हस्ताक्षर करने की ज़रूरत नहीं रही।

हाँ, अज्ञानता में ही हस्ताक्षर होते हैं। और अगर ज्ञान लिया हुआ हो तो ज्ञान हस्ताक्षर नहीं करता, वह तो अज्ञान ही हस्ताक्षर करता है। अज्ञान से ही मंज़ूर हो जाता है। अज्ञानता से किए गए हस्ताक्षर मंज़ूर हो जाते हैं।

क्या तीर्थंकरों में भी हस्ताक्षर होते हैं?

प्रश्नकर्ता : जब तीर्थंकरों का निर्वाण होता है, तब उस समय वे लोग भी हस्ताक्षर करते ही होंगे न?

दादाश्री : अवश्य, हस्ताक्षर के बिना तो होता ही नहीं है न! हस्ताक्षर हो जाते हैं लेकिन वे हस्ताक्षर रिलेटिव में होते हैं। जबकि अज्ञानी लोग खुद उसी को रिलेटिव ही रियल मानते हैं इसलिए रियल में करते हैं।

प्रश्नकर्ता : आज तक कितने ही योगी, संत, महाज्ञानी वगैरह असाधारण शक्तियोंवाले महात्मा हो चुके हैं। उनकी मृत्यु तो हो गई, तो क्या उनका अहंकार वास्तव में गया नहीं होगा?

दादाश्री : अरे भाई, अहंकार कहाँ से जाएगा ऐसे? अहंकार का जाना, वह तो किस तरह जाता है? करोड़ों जन्मों के बाद भी नहीं जा सकता। यह तो तेरा यहाँ मुफ्त में चला गया इसलिए तुझे ऐसा लगता है कि इस अहंकार को निकालना आसान बात है। यह तो अक्रम विज्ञान है! यह अक्रम विज्ञान दस लाख वर्षों में प्रकट होता है, तब जाकर ऐसा होता है! अन्यथा ऐसा होता नहीं है। वर्ना तो लाख जन्मों में भी ऐसा हो नहीं पाता। जिसका अहंकार गया वह तो ज्ञानी बन गया। और इस क्रमिकमार्ग में तो ज्ञानियों में भी अहंकार रहता है। सिर्फ तीर्थंकरों में ही अहंकार नहीं होता। उन्हें हस्ताक्षर नहीं करने होता। हस्ताक्षर तो, जिसे मरना नहीं है, उनसे हस्ताक्षर लेते हैं। जो इधर-उधर भागता रहता है, यों उस कोने में घुस जाता है, उनसे हस्ताक्षर ले लेते हैं। हस्ताक्षर करने के बाद फिर दूसरे दिन वापस पलट जाता है कि 'नहीं, अब नहीं जाना है,' कहता है। बहुत दु:ख होता हो, उस वक्त हस्ताक्षर कर देता है।

अंत:करण का कार्य, पढ़ते समय

प्रश्नकर्ता : ये पढ़ना, समझना, बोलना, इन सबमें से किस-किस के कार्य का अंत:करण में समावेश होता है?

दादाश्री : सभी कार्य अंत:करण के हैं। अंत:करण की मदद के बगैर कुछ भी नहीं हो सकता।

प्रश्नकर्ता : उनमें से अक्षर पढ़ने का काम किसका कहलाता है?

दादाश्री : पढ़ने का? वह सब चित्त का काम है। जितना चोखा हो, उस अनुसार सब काम होता है।

प्रश्नकर्ता : समझ में आना, वह किसका काम है?

दादाश्री : वह बुद्धि का काम।

प्रश्नकर्ता : और उसी समय ये शब्द निकले वह?

दादाश्री : वह सब अहंकार का काम है।

प्रश्नकर्ता : तो मन का क्या काम रहा?

दादाश्री : मन इसमें भाग नहीं लेता। उसका

मन अलग होता है। उसका वोट (मत) अलग। यहाँ चित्त, बुद्धि और अहंकार के तीन वोट एक तरफ और एक अलग वोट सिर्फ मन का। जिसके जीतने के वोट होते हैं, ये तीन उसके साथ हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : पढ़ा हुआ धारण भी हो जाता है, वह किसका काम है?

दादाश्री : वह अहंकार का काम है। वह धारण करता है। अंधा है, लेकिन धारण कर सकता है।

प्रश्नकर्ता : और यदि धारण नहीं हो पाए तो?

दादाश्री : तो उतनी ही अहंकार में बरकत नहीं है।

एकाग्र करनेवाला अहंकार है। और बुद्धि की अनुमती से वह अहंकार करता है।

पार्लियामेन्ट में अहंकार का वीटो पावर

प्रश्नकर्ता : क्या इगोइज़म को ऐसा डर रहता होगा कि अगर बुद्धि का नहीं मानूँगा तो मैं हार जाऊँगा?

दादाश्री : बुद्धि के आधार पर ही तो वह जी रहा है। बुद्धि का आधार ही तो उसका जीवन है। बुद्धि है, तभी तक तू है। इसीलिए हम कहते हैं न कि अबुध हो जाओ। ऐसा किसलिए कहते हैं कि अगर बुद्धि नहीं रहेगी तो वह भाई (अहंकार) भी नहीं रहेगा। और किसलिए अबुध कहते हैं कि अगर तुझे ज्ञानप्रकाश मिल गया है, तो फिर तुझे यह दीया लेकर घूमने की क्या ज़रूरत है? बुद्धि है तभी इस भाई का अस्तित्व है, वर्ना अस्तित्व ही नहीं है। और फिर हैं अलग! बुद्धि और वह (अहंकार) दोनों अलग हैं। कई बार तो बुद्धि और अहंकार दोनों में मतभेद भी पड़ जाते हैं। बुद्धि कहे, 'इतना अहंकार करने जैसा नहीं हैं।' तब वह कहता, 'करूँगा, बोल।' अत: वैसे दोनों हैं अलग। जब दोनों के बीच झंझट हो जाती है, तब वास्तव में देखने में मज़ा आता है। वह अंधा और यह देखनेवाली। देखती है इसलिए रौब जमाती है। अब अंधा अपना अहंकार नहीं छोड़ता। फिर भी, वह तो जहाँ बुद्धि कहे वहीं हस्ताक्षर कर देता है।

बुद्धि अहंकार के हस्ताक्षर लेती है। अहंकार के हस्ताक्षर लेने के बाद तुरंत सारा कार्य हो जाता है। और जो कार्य नहीं होनेवाला हो वहाँ पर अहंकार बुद्धि से अलग हो जाता है। अहंकार आपत्ति उठाता है कि 'नहीं, यहाँ नहीं चलेगा'।

अहंकार जिस के पक्ष में पड़े कि 'नहीं, यह करना ही है' तब दूसरा पक्ष टूट जाता है और अगर उस पक्ष में पड़े तब यह पक्ष टूट जाता है। वह इस पर आधारित है कि अहंकार किस तरफ है। अहंकार किस आधार पर पक्ष में होता है? ज्ञान के आधार पर। वह चुस्त ज्ञान होना चाहिए। ऐसा शुष्क ज्ञान नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ऐसा भी हो सकता है न, कि किसी चीज़ पर अहंकार के हस्ताक्षर नहीं होते लेकिन बुद्धि ने डिसिज़न ले लिया हो, तब फिर उस काग़ज का क्या?

दादाश्री : नहीं, अगर डिसिज़न ले लिया न, तो उस पर अहंकार के हस्ताक्षर हो ही जाते हैं। इसका मतलब वह कार्य हो गया। और अगर अहंकार अलग हो गया और बुद्धि अकेली रह गई, तो वह विधवा स्थिति में आ जाती है। अगर प्रेसिडेन्ट नहीं हो, तो विधवा जैसा ही हुआ न!

हस्ताक्षर को अलग कर दे, वही पुरुषार्थ

कई बार मन मना करता है, तो कभी चित्त मना करता है। बाकी अहंकार तो बुद्धि के साथ ही है हमेशा, अकेला नहीं रहता। सिर्फ अहंकार कभी बुद्धि से अलग नहीं हो सकता। बुद्धि और अहंकार,

जहाँ तक हो सके, ये दोनों तो जुदा नहीं होते। शायद ही कभी जुदा होते हैं। बुद्धि के साथ तो अहंकार ने हस्ताक्षर किए होते ही हैं, अब उस हस्ताक्षर को अलग कर दे, वही पुरुषार्थ।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और अहंकार को अलग करना, वह पुरुषार्थ है?

दादाश्री : वह पुरुषार्थ है। वह व्यवहारिक पुरुषार्थ है।

प्रश्नकर्ता : अब इसे ज़रा विस्तार से समझाइए कि बुद्धि और अहंकार को अलग करना व्यवहार का वही पुरुषार्थ है।

दादाश्री : हाँ, बुद्धि और अहंकार को अलग करना, व्यवहार का वह पुरुषार्थ है। अगर व्यवहार में बुद्धि और अहंकार एकाकार हो जाए, तो उसमें कोई पुरुषार्थ हुआ ही नहीं। व्यवहार में बुद्धि और अहंकार, दोनों अलग रहने चाहिए, तभी पुरुषार्थ हुआ कहलाएगा। हम सभी को (अक्रम मार्ग में) उसकी ज़रूरत नहीं है।

हम ज्ञाता, अंत:करण ज्ञेय

'अपना' तो इन मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार के साथ 'ज्ञाता-ज्ञेय' का नाता है। हम ज्ञाता और अंत:करण ज्ञेय। ज्ञेय-ज्ञाता संबंध, शादी संबंध नहीं। इसलिए अलग ही रहता है, वह 'हम' से।

प्रश्नकर्ता : मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार का अवलंबन लेकर चलते हैं फिर भी कोई फायदा नहीं है, लेकिन फिर भी बार-बार ले लिया जाता है।

दादाश्री : वह भी आप नहीं लेते हो। वह तो ऐसा आपको लगता है, और जैसा लगता है उस अनुसार आप उस ओर झुक जाते हो, उस तरफ के हस्ताक्षर हो जाते हैं, हस्ताक्षर और मोहर लग जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर से बार-बार हमारी वह अवलंबन लेने की अनादि की लत इतनी अधिक गाढ़ है।

दादाश्री : अध्यास हो चुका है न! वह अध्यास छूटेगा तभी न!

प्रश्नकर्ता : उतनी जागृति नहीं रहती।

दादाश्री : अध्यास हो चुका है लेकिन उस अध्यास के पीछे यह जो जागृति है न, वही आप हो। और यह जो अध्यास है, वह अध्यास है। आप अपना काम करो, वह अध्यास अध्यास का काम करेगा।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। हम हमारा काम करें और अध्यास अध्यास का काम करे। तो यह अध्यासवाला ही फीका पड़ जाएगा।

दादाश्री : अपना ज्ञान ऐसा ही कहता है न!

प्रश्नकर्ता : अपना ज्ञान तो ऐसा स्पष्ट कहता है कि 'हमें कुछ भी करना नहीं है, कोई अनुमोदन नहीं करना है', फिर भी उसमें एकाकार हो जाते हैं।

दादाश्री : हाँ। एकाकार हो जाते हैं लेकिन वास्तव में एकाकार नहीं होते, लेकिन सिर्फ ऐसा भासित होता है। एकाकार हो जाना वह अलग चीज़ है और भासित होना वह अलग है। आपको ऐसा भासित होता है इसलिए आप उस तरफ हस्ताक्षर कर देते हो। ऐसा भासित हो फिर भी हस्ताक्षर नहीं कर देने चाहिए कि, 'ओहो, यह तो भासित हो रहा है। ऐसा हो ही कैसे सकता है?'

ज्ञायक नहीं बनता ज्ञेय कभी भी

ज्ञायक ज्ञेयरूपी होगा ही कैसे? जो ज्ञायक है, वह ज्ञेयरूपी कैसे बन सकता है? जो एकाकार होता है, वह ज्ञेय है। ज्ञायक ज्ञेय बन जाता है, आप कहते हो, 'एकाकार हो जाते हैं'। अर्थात् ज्ञायक एकाकार हो जाता है उसमें, तब ज्ञायक ज्ञेय बन जाता है।

लेकिन नहीं, ज्ञेय और ज्ञायक एक नहीं हो सकते, अलग ही होते हैं।

प्रश्नकर्ता : आप जो कहते हैं, वह वास्तव में अलग हैं, लेकिन यों जनरली दखल चलती ही रहती है। इसमें ज्ञेय का ही एक भाग ज्ञायक बनकर काम चलाता है।

दादाश्री : लेकिन वह तो आपकी मान्यता है, आप उस ज्ञेय को ऐसा मानते ही क्यों हो कि 'ज्ञायक है'?

प्रश्नकर्ता : ज्ञेय और शुद्ध चेतन, दो ही हैं। ज्ञायक भी ज्ञेय है। बीच में जो ज्ञायक खड़ा हुआ है, वह भी उस ज्ञेय का ही भाग है?

दादाश्री : नहीं, ज्ञायक तो ज्ञायक ही है।

प्रश्नकर्ता : अब उन संगी क्रियाओं की पैदाइश तो नहीं होगी न? आप जिसे ज्ञायक कहते हैं, वह संगी क्रिया की निष्पत्तिवाला नहीं है न?

दादाश्री : उससे लेना-देना नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : यह बात तो ठीक है। अब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, ज्ञेय स्वरूप हैं?

दादाश्री : हाँ, वे ज्ञेय स्वरूप हैं।

प्रश्नकर्ता : और उनमें से जो ज्ञायक खड़ा हुआ, 'मैं पन' खड़ा हुआ, वह क्या है?

दादाश्री : हाँ, उसमें से जो 'मैं पन' है उसी को भ्रांति कहते हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह जो भ्रांतिवाला ज्ञायक है, वह ज़्यादा परेशान करता है।

दादाश्री : वह जो भ्रांतिवाला है न, वही कहता है कि 'मैं जानता हूँ और मैं कर रहा हूँ।' वह चेतन में भी नहीं आता और जड़ में भी नहीं आता। वह तो हमें ऐसा भासित होता है कि हम इसमें एकाकार हो गए हैं। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह सारा ही ज्ञेय है, पूरा डिपार्टमेन्ट।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अभी तक अनादि के अध्यास से वह जो ज्ञायक बन बैठा है, वह ऊँडे-ऊँडे अपेक्षा से ज्ञेय पर खुद को अलग रखता है।

दादाश्री : उसी को गिरना कहते हैं न! उसी को मंद जागृति कहते हैं। संपूर्ण जागृति किसे कहते हैं? जागृति दिखती ज़रूर है लेकिन फिर भी ज्ञायक ज्ञेय रूपी बन जाता है न! वास्तव में ज्ञाता ज्ञेय बनता ही नहीं लेकिन वह मानता है कि बन गया। वही भ्रांति है।

कोई मुझ से पूछे कि 'ज्ञेय ज्ञाता एक हो गए थे?' तब मैं मना करता हूँ, मैं कहता हूँ 'आप एक हुए ही नहीं थे लेकिन आपने ऐसा उल्टा मान लिया था।'

अक्रम मार्ग के 'महात्माओं' के अंत:करण की स्थिति कैसी रहती है? उनकी दखलें बंद हो चुकी होती है। लेकिन जब पिछले परिणाम आते हैं, तब खुद उलझ जाता है कि 'ये मेरे ही परिणाम है'। जब वह मुझसे पूछे कि, 'ये खुद के परिणाम है या अन्य का?' तब मैं बताता हूँ कि, 'ये परिणाम तो किसी और के हैं।'

रहें ज्ञाता-दृष्टा अंत:करण के

यह संसार किस वजह से खड़ा है? अंत:करण में मन शोर मचाए, तो खुद फोन उठा लेता है और 'हैलो, हैलो' करता है। चित्त का फोन उठा लेता है, अहंकार बुद्धि का फोन उठा लेता है, इसलिए। मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार क्या धर्म निभाते हैं, उसे देखिए और जानिए। 'हमें' किसी का भी फोन नहीं लेना है। आँख, कान, नाक आदि क्या-क्या धर्म निभाते हैं उसके हम 'ज्ञाता-दृष्टा' हैं। यदि मन का या चित्त का या किसी का भी फोन उठा लिया, तो सब जगह टकराव हो जाएगा। वह तो जिसका फोन हो, उसे 'हैलो' करने देना है, 'खुद' मत करना।

अरे, आपने कभी खाने के बाद पता लगाया है कि अंदर आँतों में और आमाशय में क्या होता है? सभी अवयव अपने गुणधर्म में ही हैं। कान उनके सुनने के गुणधर्म में नहीं होंगे, तो सुनाई नहीं देगा। नाक उसके गुणधर्म में नहीं होगी, तो सुगंध और दुर्गंध नहीं आएगी। उसी प्रकार मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, सभी अपने गुणधर्म में ठीक से चल रहे हैं या नहीं, उसका ध्यान रखते रहना है। अगर 'खुद' 'शुद्धात्मा' में रहे, तो कोई भी परेशानी आए, ऐसा नहीं है। अंत:करण उसके गुणधर्म में रहे, जैसे कि मन पैम्फलेट दिखाने का काम करे, चित्त फोटो दिखाए, बुद्धि डिसिज़न ले और अहंकार हस्ताक्षर कर दे, तो सब ठीक चलेगा। वे खुद के गुणधर्मों में रहें और शुद्धात्मा अपने गुणधर्मों में रहे, ज्ञाता-दृष्टा पद में रहे, तो कोई परेशानी आए, ऐसा नहीं है। प्रत्येक अपने-अपने गुणधर्म में ही हैं। अंत:करण में कौन-कौन से गुणधर्म बिगड़े हुए हैं, उसकी जाँच करना और बिगड़े हुए हों तो कैसे सुधारें, सिर्फ इतना ही करना है। लेकिन यह तो कहता है कि 'मैंने सोचा, मैं ही बोल रहा हूँ, मैं ही कर रहा हूँ।' ये हाथ-पैर भी अपने धर्म में हैं, लेकिन कहता है कि 'मैं चला'। मात्र अहंकार ही करता है और अहंकार को ही खुद का आत्मा माना है, इसकी ही अड़चन है।

दखल किसकी? उपाय क्या?

प्रश्नकर्ता : अब इस दखल को बंद करने का उपाय बताइए दादा।

दादाश्री : ज्ञाता-दृष्टा बन जाओगे तो दखल बंद हो जाएगी। खुद का गुणधर्म ज्ञाता-दृष्टा तो है, जो चारित्रमोह आए उसे पहचानो कि यह चारित्रमोह है। उसे देखो और जानो। देखने से चला जाएगा।

प्रश्नकर्ता : जो देखने-जाननेवाले हैं, वही खुद दखल करते हैं।

दादाश्री : देखने-जाननेवाला करता होगा क्या? वह तो दखल करनेवाले को देखता है, जानता है कि यह दखल कर रहा है। डिस्चार्ज अहंकार दखल करता है।

प्रश्नकर्ता : क्या बुद्धि दखल करती है?

दादाश्री : बुद्धि भी दखल करती है, सभी दखल करते हैं। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सभी दखलवाले ही हैं न? लेकिन मूलत: गुनहगार अहंकार है। क्योंकि उसके खुद के हस्ताक्षर है।

वास्तव में खुद दोषित है ही नहीं, लेकिन खुद कहता है कि, 'मैंने यह किया।' गलत करे या सही करे फिर भी 'मैंने किया' ऐसा कहता है। वह खुद हस्ताक्षर कर देता है, इसलिए भुगतना पड़ता है।

खाता कौन है? पुद्गल ही खाता है। यह तो भ्रांति से ऐसा मान लिया है कि 'मैं खाता हूँ'। अहंकार ने भी कभी भोगा नहीं है। अहंकार तो व्यर्थ ही सिर पर ले लेता है। हस्ताक्षर कर देता है, 'मैंने किया।' अहम्कार, 'मैंने किया' कहेगा। 'अरे, तूने नहीं किया। तू व्यर्थ ही क्यों ऐसा कह रहा है?' यह तो व्यर्थ ही सिर पर ले लेता है, हस्ताक्षर कर देता है।

अत: अभियुक्त के तौर पर हस्ताक्षर नहीं करने हैं। अभियुक्त के तौर पर हस्ताक्षर करता है इसलिए इलज़ाम उसके सिर पर आ जाता है। अब ऐसे में उसे कैसे समझ आए कि 'मैं अभियुक्त के तौर पर फँस गया हूँ'।

पुद्गलभाव को देखना-जानना वह आत्माभाव

प्रश्नकर्ता : मन पैम्फ्लट दिखाता है, चित्त भटका करता है, बुद्धि डिसिज़न देती है, अहंकार हस्ताक्षर करता है, ऐसा सब होता है इसे 'जाने' तो बंधन नहीं है न?

दादाश्री : हाँ, यदि 'जाने' तो ही उसे बंधन नहीं है। इसे जाननेवाला अलग होना चाहिए तभी वह बंधन में नहीं है।

जाननेवाला हुआ, ज्ञाता रहा, तो सब चला जाएगा! लेकिन वह हमेशा ज्ञाता रहता नहीं है न! ऐसा है कि संपूर्ण ज्ञानीपद और अंश ज्ञानीपद, ये दोनों ही होते हैं न! एक तरफ ज्ञातापद भी होता है और दूसरी तरफ अंश ज्ञानीपद भी रहता है। दोनों चलते रहते हैं सर्वांश होने तक।

सर्वांश होने तक एकदम से नहीं हो जाता। ज्ञातापद हमेशा नहीं रहता। थोड़े वक्त के लिए, कुछ समय के लिए रहता है। फिर वापस वैसा का वैसा ही। यों करते-करते सर्वांश होता जाता है। पिछली ठोकरें लगती रहती है न! एक सीढ़ी चढ़ना हो तो हम एक-एक पायदान चढ़ते हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि छत तक पहुँच गए। जितने पायदान चढ़े उतने ऊपर की ओर बढ़े।

मन, मन का धर्म अदा करता है, बुद्धि, बुद्धि का धर्म अदा करती है, अहंकार, अहंकार धर्म अदा करता है। वे सभी *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) भाव हैं, वे आत्मभाव नहीं है। इन सभी *पुद्गल* भावों को 'हमें' देखना और जानना है, वह आत्मभाव है। ज्ञाता-दृष्टा और परमानंद, वही आत्मभाव है। *पुद्गल* भाव तो अंतहीन हैं। लोग *पुद्गल* भाव में ही फँसे हुए हैं।

चित्रित करता है पुद्गल, लेकिन यदि उसमें 'खुद' तन्मयाकार हुआ, तो वहाँ हस्ताक्षर कर दिए। लेकिन तन्मयाकार नहीं हो और जागृति रखें और जो चित्रीकरण होता हो, उसे केवल देखे और जाने तो उस चित्रीकरण से मुक्त ही है।

प्रकृति से बंध गया खुद अहंकार के हस्ताक्षर से

'प्रकृतिक यंत्रवत् मनमां भळे छे आत्मभावास्ति; बुद्धि तेजे सही करता अहम्ने विश्वे आसक्ति।'

प्रकृतिक यानी प्रकृति के बारे में कहना चाहते हैं। प्रकृतिक यंत्रवत् मन में, अर्थात् प्रकृति के कारण मन यंत्रवत् है। पूरी प्रकृति ही यंत्रवत् है। *'मन मां आत्मा भळे'* ऐसा शब्द लिखा है यह। *'प्रकृति यंत्रवत्'* अर्थात् अंदर मशीन की तरह ही विचार आते रहते हैं। मन में *'भळे छे आत्मभावास्ति'* आत्मभाव अर्थात् यह मैं खुद हूँ, और मुझे विचार आ रहे हैं। उसमें एकाकार हो जाए तब क्या होता है? *'बुद्धि तेजे सही करता,'* फिर बुद्धि से हस्ताक्षर करे कि मुझे यह इतना अच्छा विचार आया। *'अहम् ने विश्वे आसक्ति'* अर्थात् फिर पूरे जगत् की आसक्ति उसे चिपट पड़ती है। आपको समझ में आता है न? आपसे नहीं चिपट पड़ी है न? यही करते रहते हो। सिर्फ आप ही नहीं लेकिन पूरा जगत् ऐसा ही करता है। यदि यह बंद हो जाए, यानी फिर हो जाएगा, काम हो जाएगा!

हस्ताक्षर होते हैं, अवस्था में तन्मय होने से

यह तो पिछली अवस्थाएँ निरंतर भूलता रहता है और नई अवस्था में तन्मयाकार रहता है। अवस्थाओं में तन्मयाकार रहे वही संसार, वही संसारबीज डालता है और स्वरूप में तन्मयाकार रहे वह है मोक्ष।

इस संसार में कैसा है कि दु:ख पड़े उसे भी भूल जाता है, सुख आए उसे भी भूल जाता है, बचपन में बैर बाँधा उसे भी भूल जाता है। फिर साथ में बैठकर चाय पीते हैं, वापस सबकुछ भूल जाते हैं। लेकिन जिस समय जो अवस्था उत्पन्न हुई, उस अवस्था में एकाकार होकर हस्ताक्षर कर देता है। ये किए हुए हस्ताक्षर फिर मिटते नहीं हैं। इसलिए, ये जो हस्ताक्षर हो जाते हैं, उनका हर्ज है। लोग बात-बात में हस्ताक्षर कर देते हैं। यों ही डाँटते हुए भी हस्ताक्षर हो जाते हैं। अरे! अपनी बेटी को कोई उठाकर ले जाए तो उस समय भी हस्ताक्षर नहीं करने चाहिए। लोग अवस्था में ही सारा चित्रण कर देते हैं, मार डालने का भी चित्रण कर देते हैं!

तय कर.... तो छूटेगा

प्रश्नकर्ता : इन विचारों को दबा दूँ, ऐसा करता हूँ फिर भी विचार आते हैं।

दादाश्री : मेरा कहना है कि विचार आते हैं उसा हर्ज नहीं है, लेकिन विचार जो आते हैं, उसे देखते रहो और उसके अमल में आप एकाकार नहीं होना। जो विचार आते हैं, उसके अमल में आप हस्ताक्षर न करो। वह कहेंगे 'हस्ताक्षर करो' तो हम कहेंगे 'नहीं, अब हस्ताक्षर नहीं होंगे। बहुत दिनों तक हमने हस्ताक्षर किए, अब हस्ताक्षर नहीं करेंगे।' हम ऐसा कहते हैं कि आप ऐसा तय करो कि 'इसमें तन्मयाकार होना ही नहीं है।' जुदा रहकर देखते रहो। अत: एक दिन आप छूट जाओगे।

हस्ताक्षर करके, जोखिम मोल लेता है

आचार, विचार और उच्चार ये तीनों चंचल चीज़ें हैं। 'अपने को' तो केवल जानना चाहिए कि विचार ऐसा आया। विचार आते हैं, उसके लिए हम ज़िम्मेदार नहीं हैं, क्योंकि वे तो पहले की गाँठें फूट रही हैं। वह तो पहले हस्ताक्षर हो गए थे, इसलिए आते हैं। आज उसके ज़िम्मेदार नहीं हैं। लेकिन यदि फिर से हस्ताक्षर कर दें, तो भयंकर जोखिम है।

प्रश्नकर्ता : मतलब तभी अंदर अगल ऐसा हो कि यह गलत है, फिर भी उस ओर चला गया। मन का मान लिया उस वक्त।

दादाश्री : तो फिर अब वह गलत हुआ, यह जानते हैं। ऊपर से यह भी जानता है कि समुद्र में डूब जाऊँगा और मर जाऊँगा यह जानता है, फिर भी यदि कोई जाए तो क्या समुद्र उसे मना करेगा? समुद्र तो कहेगा, 'आ भाई, मैं तो विशाल पेट का हूँ। कई लोगों को समा लिया है।'

प्रश्नकर्ता : पिछले एक साल से मैं रिज़िस्ट कर रहा था।

दादाश्री : मन तो बहुत मज़बूत है, लेकिन आप खुद कमज़ोर हो गए तो फिर शादी हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : ऐसा बने, वह मन मज़बूत कहलाता है?

दादाश्री : वह इन्सान कमज़ोर ही कहलाएगा न। मन कमज़ोर नहीं कहलाता। बल्कि मन उसे खींच गया। मन तो मज़बूत कहलाएगा।

प्रश्नकर्ता : इसमें इसके केस में आपने मन को 'मज़बूत' कहा और इन्सान को 'कमज़ोर' कहा। तो इन्सान यानी कौन कमज़ोर कहलाएगा?

दादाश्री : अहंकार और बुद्धि कमज़ोर। इसमें असल गर्वमेन्ट का राज है, तो इसमें बुद्धि और अहंकार का है। लेकिन इसमें मन का राज हो जाए तो खत्म। मन का तो पार्लामेन्टरी पद्धति से, उसका सिर्फ एक रोल है। वह भी बुद्धि माने, स्वीकार करे, तब अहंकार दस्तखत करता है। वर्ना तब तक दस्तखत भी नहीं होते।

अहंकार वही अंधापन

प्रश्नकर्ता : आपने कहा न कि अहंकार तो अंधा है, वह बात समझ नहीं आती।

दादाश्री : अंधा बुद्धि की आँखों से चलता है। बुद्धि जिस तरह हस्ताक्षर करने को कहे उस तरह कर देता है और चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : यदि अहंकार नहीं हो तो क्या बुद्धि ठीक से काम नहीं करती?

दादाश्री : नहीं। अहंकार नहीं तो बुद्धि होगी ही नहीं। मन-बुद्धि-चित्त, वगैरह तभी हैं जब अहंकार हैं। अहंकार यानी कर्ता-भोक्ता। कर्ता-भोक्ता सबकुछ इसे हैं, मार भी पड़ती है इसी को। बुद्धि वगैरह सभी दूर खड़े रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अहंकार मार खाता है।

दादाश्री : हाँ, यानी कि यह मूर्ख बिना किसी गलती के मार खाता रहता है। बुद्धि और मन को कोई परेशानी नहीं है।

अहंकार और अंधापन दोनों एक सरीखे कहलाते हैं। जिसका जिस बात में अहंकार ज़्यादा होता है, उस बारे में उसे अंधापन ज़्यादा रहता है। जितनी जागृति बढ़ती जाए, अहंकार उतना ही विलय होता जाता है। अजागृति के कारण अहंकार है और अहंकार है इसी कारण अजागृति है। अजागृति गई यानी अहंकार गया।

जितना अहंकार, उतना ही अंधापन है। जितना अंधापन उतना ही अहंकार है। इस अहंकार के चार भाग हैं, क्रोध-मान-माया-लोभ। जब लोभ में पड़े, पैसों में पड़े तो लोभांध हो जाता है, मान में पड़े तो मानांध हो जाता है। क्रोध में पड़े तब क्रोधांध हो जाता है। सभी में अंधापन होता है। चाहे किसी में भी हो, लेकिन अहंकार ही अंधापन है। अहंकार, वह भ्रांति से उत्पन्न हुई चीज़ है।

अहंकार अंधा होता है इसलिए सब उल्टा-सुल्टा करता है। वह स्वभाव से ही अंधा है, बुद्धि की आँखों से थोड़ा बहुत देखता है और बुद्धि की सलाह से ही चलता है। जब बुद्धि कहे कि भाई, इस प्रकार कर डालो तब हस्ताक्षर कर देता है। लेकिन 'मैं करता हूँ' ऐसा अहंकार। हाँ, बस, मैंपना का, वह 'मैं'पद कहलाता है। बाकी, अहंकार विलय हो जाने के बाद खुद का हित समझने लगता है, हित समझ में आए, तब खुद के दोष दिखते हैं। वर्ना जब तक अहंकार है तब तक खुद अंधा है।

तब, खुद के दोष दिखाई देते हैं

मैंने ज्यों-ज्यों अपने अहंकार को विलय होते हुए देखा, त्यों-त्यों मेरी आँखें खुलती गईं। अंधेपन के कारण अपने खुद के दोष हमें दिखाई नहीं देते। वह अहंकार जब कम हो जाए, तब खुद के दोष दिखाई देते हैं। इन भाई को खुद के जो दोष दिखाई देते हैं, उतना ही उसे खुद का इगोइज़म दिखाई देता है। जिस प्रकार मेरी आँखों द्वारा आप मुझे सामने दिखाई देते हो, वैसे ही उन्हें अपना अहंकार दिखता है। अहंकार का सारा पागलपन दिखाई देता है। वह सुबह उसका पूरा वर्णन कर रहा था। अब ऐसी दृष्टि कहाँ से हो सकती है? इस प्रकार खुद का अहंकार दिखाई दे। और फिर वह कैसा पागलपन करता है, वह भी बताता है। ऐसा कभी हुआ ही नहीं था! यह कुछ नए ही प्रकार का है। इसलिए हमें अपना काम निकाल लेने जैसा है।

(इस ज्ञान के बाद) हम शुद्धात्मा बन गए। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा जानो। और जो पसंद नहीं है, उसकी रमणता में रहना पड़ता है। बाहर जाना पसंद नहीं हो फिर भी पूर्व में हस्ताक्षर हो गए हैं, इसलिए उस रमणता में रहना पड़ता है। अनादिकाल से अज्ञानता का ही परिचय था न, इसलिए अभी भी अज्ञान बार-बार खड़ा हो जाता है। तो उनसे कहना कि 'अब तुम कितना भी चिल्लाओ फिर भी हम सुननेवाले नहीं है।' फिर भी, अनादि से परिचय है इसलिए वह आदत जाएगी नहीं।

होम डिपार्टमेन्ट में रहकर, करो *निकाल*

प्रश्नकर्ता : किसी ने मुझे गाली दी तो मुझे 'होम' (आत्मा) में रहकर किस तरह *निकाल* (निपटारा) करना चाहिए?

दादाश्री : तुझे किसी ने गाली दी तो वह व्यवस्थित था और वह कोई पिछला हिसाब होगा। इस सबका, 'होम' में रहकर *निकाल* नहीं करेंगे तो उस वजह से मन फिर से शुरू हो जाएगा। 'होम' में रहना अर्थात् शुद्ध ही। 'खुद' 'शुद्धात्मा' रहे तो प्रज्ञा अपने आप ही *निकाल* करेगी। प्रज्ञा उस घड़ी काम करती रहेगी। मन में समझ जाता है कि यह 'व्यवस्थित है,' इसलिए गाली दी। गाली देनेवाले ने

क्यों चार ही शब्द कहे, बारह शब्द क्यों नहीं कहे? चार शब्दों की गालियाँ दे रहा है। क्या बारह शब्दों की नहीं होतीं? होती है, लेकिन चार शब्द कहे इसलिए 'व्यवस्थित' है। अत: 'व्यवस्थित' है कहना और और अपना हिसाब है, ऐसा कहना। साथ में ऐसा सब कहो, तो फिर समाधान हो जाएगा।

रहना होम डिपार्टमेन्ट में, ज्ञान से

प्रश्नकर्ता : ये मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार वगैरह चल रहा हो, उस समय 'होम डिपार्टमेन्ट' (आत्मा) में कैसे रहें?

दादाश्री : रह सकते हैं! 'होम डिपार्टमेन्ट' तो अपना ही स्वरूप है। शुद्धात्मा का स्वरूप है, जागृति है। 'होम डिपार्टमेन्ट' में तो पकवान खाने हैं, पकवान छोड़ नहीं देने हैं।

प्रश्नकर्ता : जहाँ भय लगता है न, मन वहीं पर जाता है।

दादाश्री : मन का और अपना लेना भी नहीं है और देना भी नहीं है। नहाना भी नहीं है और निचोड़ना भी नहीं है। पड़ोस के रूम में लोग अधम मचा रहे हो, बातें कर रहे हो, सिर फोड़ रहे हो, तो अपने को क्या लेना-देना? उसी तरह पास के रूम में मन है, बुद्धि है, चित्त है, अहंकार है, सभी अधम मचा रहे हों तो उससे हमें क्या? हमें तो देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, ये सभी थोट्स (विचार) आएँ और हम उसे देख रहे हों, तब फिर बुद्धि दखल करने लगती है, प्रोफिट एन्ड लॉस दिखाने लगती है। तो जब ऐसे विचार आएँ, तब हमें किस प्रकार अलग रहना चाहिए?

दादाश्री : आपको देखते रहना है उसे।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह हमें खींचती है सिग्नेचर के लिए, वह.....

दादाश्री : वह क्या-क्या करती है? बुद्धि क्या करती है, उसे देखते रहना और मन क्या विचार करता है, उसे भी देखते रहना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हम देखते रहते हैं, लेकिन वह कौन सी ऐसी चीज़ अंदर है जो हमें खींचती है कि बताओ यह सही है या नहीं? और इस प्रकार वह कुछ भी करके हमारे सिग्नेचर ले ही जाती है। हमारे अहंकार से हस्ताक्षर करवा लेती है। वह ऐसा कुछ करती है कि हमें खींचकर सिग्नेचर ले ही जाती है। तब वहाँ जागृति नहीं रहती कि नहीं, नहीं, नहीं।

दादाश्री : ये सब पता चलता है मतलब जागृत तो हो ही। तू उस तरफ झुक जाता है। यदि जागृत नहीं हो तो ऐसा पता ही नहीं चलता।

प्रश्नकर्ता : तो फिर मैं ऐसा क्या करूँ कि मैं झुक नहीं जाऊँ?

दादाश्री : वहाँ पर तू झुक जाता है यानी तुझे वे सब पसंद है। यदि तुझे पसंद नहीं हो तो तू झुकेगा नहीं!

प्रश्नकर्ता : अत: फीका नहीं लगता, ऐसा कहना चाहते हो? यानी वह फीका लगेगा तो झुक नहीं जाओगे, ऐसा?

दादाश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ऐसा किस प्रकार करें?

दादाश्री : यदि तुझे पसंद नहीं हो तो तन्मयाकार नहीं हो जाता। सिर्फ वह देखते ही रहना।

'नहीं है मेरा,' कहते ही हो जाए जुदा

प्रश्नकर्ता : इन विनाशी चीज़ों में सुख है ऐसा भीतर रहता है और तुरंत खुद उसमें तन्मयाकार होकर उसमें से सुख ले लेता है। फिर बाद में उसे

पता चलता है कि यह तो रिलेटिव सुख ले लिया। ऐसा कब होएगा कि जब अंदर खुद सुख लेने के लिए खिंचा चला जा रहा हो उस समय भी वह जागृत रहे और उसमें से सुख नहीं ले, ऐसा कब हो पाएगा?

दादाश्री : ऐसा है न कि तेरा जो डिस्चार्ज स्वरूप है न, उसे सुख चाहिए अब। तुझे इसमें से सुख नहीं चाहिए। भौतिक है इसलिए इसमें ज़रा सा भी सुख है ही नहीं ऐसा कहा तो तू जुदा रह सकता है। तूने तो सनातन सुख को सुख माना है। यह तो भौतिक सुख है, वह डिस्चार्ज है। तुझे डिस्चार्ज को, यानी चंदू को सुख महसूस हो तो चंदू से कहना कि 'ऐसा क्यों कर रहे हैं' फिर भी वह सुख भोग लेगा।

चंदू के साथ बातें करना शुरू कर। बातें करेगा तो सभीकुछ अलग।

प्रश्नकर्ता : मैं हमेशा करता हूँ।

दादाश्री : नहीं, ठीक से नहीं करता है। इस तरह तन्मयाकार हो जाता है, मतलब (ठीक से) नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : दादा, अंदर इतने आर्ग्यूमेन्ट चलते हैं कि फिर सिर दर्द होने लगता है।

दादाश्री : यदि सिर दुःखने लगे तो बंद रखना।

प्रश्नकर्ता : जब बहुत आर्ग्यूमेन्ट करता है, तब मेरा सिर दुःखने लगता है। फिर उसे डाइवर्ट करने के लिए मैं टी.वी. देखता हूँ।

दादाश्री : नहीं, नहीं। टी.वी. तो और भी ज़्यादा नुकसान पहुँचाता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर मुझे क्या करना चाहिए? 'देखना' बढ़ जाए तो उस समय अंदर शांति नहीं रह पाती। बहुत सिर दुःखने लगता है। अंदर घमासान मच जाता है।

दादाश्री : ऐसा होने लगे तब 'मेरा नहीं है' ऐसा बोलें तो भी जुदा पड़ जाता है वह। 'यह मेरा और यह मेरा नहीं है।' ऐसी डिर्माकेशन लाइन डाल दी है। 'यह मेरा नहीं है,' ऐसा कहेगा तो भी छूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : पिछले साल पूरे बरस शांति के बजाय यह मन बहुत परेशान किया था। इससे बहुत फ्रस्ट्रेशन रहा करता था।

दादाश्री : अपना लेना-देना नहीं है, फिर वह कैसे परेशान करेगा? वहाँ कुछ लेना-देना है ही नहीं। होली देखने से क्या कोई जल जाता है? आँखें जल नहीं जातीं!

और मन का काम कैसा है? शरीर से बाहर निकलता ही नहीं। जो गाँठें पड़ी हुई हैं, वे फूटती हैं। अंदर गाँठें होती हैं। जब अंदर ये गाँठें फूटती हैं, तब आपको विचार आएँगे ही!

विचार में विचरण करे, अहंकार तो...

जैसे (फटाके का) अनार जलाते हैं और उसके अंदर से निकलता है, उसी तरह। लेकिन यह एक अनार तो ठीक है लेकिन मन में से जो निकलता है न, उसे बुद्धि पढ़ सकती है। अतः बुद्धि अहंकार से कहती है कि यह ठीक है। इसलिए फिर अहंकार तन्मयाकार हो जाता है। बुद्धि पढ़ सकती है कि यह खराब है और यह अच्छा है। अब उस क्षण, जब मन एक्ज़ोस्ट होता है, उन्हें विचार नहीं माना जाता।

बुद्धि यदि कहे कि, मन जो सोच रहा है वह अपने हित में है, तो अहंकार उसमें एकाकार, तन्मयाकार हो जाता है और यदि बुद्धि कहे कि यह अपने किसी काम का नहीं है, तो उस समय वह

एकाकार नहीं होता, दूर रहता है। बुद्धि कहे कि मन में जो-जो अध्यवसन खड़े हो रहे हैं, वे हितकारी हैं। तो तुरंत पढ़ लेती है। बुद्धि पढ़कर उसे बताती है कि मन ऐसा दिखा रहा है। अत: फिर वह उसमें विचरण करता है। इस तरह विचरण करके जब तन्मयाकार हो जाए तो वह विचार कहलाता है। वर्ना तब तक विचार नहीं कहलाता।

मन विचार नहीं करता। जब दोनों एकाकार हो जाएँ, तब विचार होता है। जब तक वह अकेला ही करे, तब तक तो कुछ भी नहीं। वह सारा पानी गटर में जाता है, वह कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। और जब वे दोनों एक हो जाएँ, उसके बाद कर्म बंधन होता है। अच्छे विचार आएँ तब बुद्धि उनमें तन्मयाकार हो जाती है। इसलिए विचारों (मन) में हस्ताक्षर कर देती है, बुद्धि हस्ताक्षर कर देती है। बुद्धि जहाँ पर हस्ताक्षर करती है, वहाँ अहंकार भी हस्ताक्षर कर देता है। इस प्रकार इन तीनों की पार्लियामेन्ट में प्रस्ताव पास हो जाता है। चित्त यदि मना करे तो वह भटकता रहेगा। इस पार्लियामेन्ट में चित्त का कुछ नहीं चलता। और यदि बुद्धि चित्त के साथ एक हो जाए तो फिर मन का कुछ नहीं चलता।

अब जब खराब विचार आते हैं, उस समय तन्मयाकार नहीं होता क्योंकि विचरण ही नहीं करता न! जब अच्छे विचार आते हैं, तब तन्मयाकार हो जाता है इसलिए भूल जाता है एकदम से। अत: यदि खराब और अच्छे में एकाकार नहीं होता तो जुदा ही है।

वहाँ अंत:करण का कार्य क्या है?

प्रश्नकर्ता : किसी ने गालियाँ दी तो क्या उस समय मन ही परेशान होता है?

दादाश्री : हाँ, मन ही परेशान होगा न, और कौन होगा? मन पर ही असर हो जाता है न, और फिर बुद्धि मदद करती है। बुद्धि यों समेट लेती है।

प्रश्नकर्ता : वह उसे किस तरह समेट लेती है?

दादाश्री : बुद्धि समझ जाती है कि अभी यह गाफिल है। इसलिए फिर बात को समेट लेती है।

प्रश्नकर्ता : मन परेशान हो जाए उस समय यदि जागृति हाज़िर रहे तो बुद्धि समेटेगी नहीं।

दादाश्री : जागृति तो बुद्धि को पहचानती है न कि यह बुद्धि उल्टा कहेगी। क्या ऐसा नहीं समझेगी? जागृतिवाला तो तुरंत ही यह समझ जाता है।

प्रश्नकर्ता : किसी ने गाली दी उस घड़ी मन किस प्रकार से उलझ जाता है?

दादाश्री : तुझे अनुभव नहीं है?

प्रश्नकर्ता : यों शब्दों में बताइए न आप।

दादाश्री : वापस उसी जगह पर मंडराता रहता है, घूम फिरकर उसी जगह पर जाता है। इसे कहते हैं उलझाव। उसी जगह पर उलझता जाता है। जैसे गुड़ पर मक्खी मंडराती रहती है न, पाँच मिनट इधर-उधर घूमने के बाद फिर से वहीं पर जाकर बैठ जाती है।

प्रश्नकर्ता : 'मुझे क्यों सुनाकर गया? मैंने क्या गलती की है?' ऐसा रहता है भीतर।

दादाश्री : 'वह क्या समझता है? अपने आपको क्या समझता है? उसकी ताक़त क्या है?' फिर फॉरेन में ये सब शुरू हो जाता है!

प्रश्नकर्ता : इतना सब बोलना, वह क्या मन का फंक्शन है या अहंकार का फंक्शन है?

दादाश्री : मन का, और किसका? बुद्धि तो समेट लेती है। पत्नी पति को कान भरती है न, वैसे ही बुद्धि कान भरती है।

प्रश्नकर्ता : इसमें बुद्धि क्या कहती है?

दादाश्री : 'इसे तो रास्ते पर लाना चाहिए, ऐसा कह दे तो फिर वह कुछ भी बोल देता है। 'रास्ते पर ला देना है' कहा तो इस तरफ उल्टा चल पड़ा, एकदम से।

प्रश्नकर्ता : इसमें अहंकार क्या करता है?

दादाश्री : अहंकार तो ऐसा कर भी देता है। अहंकार तो अंधा है। बुद्धि कहे उस अनुसार वह हस्ताक्षर कर देता है।

प्रश्नकर्ता : मन तो भरकर लाया है लेकिन फिर चित्त-बुद्धि-अहंकार और काया को हिलाता हुआ चला जाता है न! यदि सिर्फ वह अकेला ही सीधा चला जाए तो हर्ज नहीं है, लेकिन यह तो सभी को हिलाता हुआ जाता है।

दादाश्री : यह तो पूरा साम्राज्य ही एक प्रकार का है न! पूरा ही अनात्मा विभाग, फॉरेन डिपार्टमेन्ट पूरा ही। जैसा भरा होगा, वैसा ही डिस्चार्ज होता रहेगा। अपने आप ही डिस्चार्ज होता है। उससे आपको कोई लेना-देना नहीं है। डिस्चार्ज होने के बाद फिर आपको परेशान नहीं करता।

बुद्धि की दखलों के समक्ष

प्रश्नकर्ता : बुद्धि दखल करे, तब क्या उसे देखते ही रहना है या कुछ और भी करना है?

दादाश्री : और क्या करना है? सिर्फ देखते ही रहना है। हमें समझ जाना है कि इसी की धाँधल है। अत: हमें उसे कहना चाहिए कि, 'तू दूर बैठ जा। हमें कुछ लेना-देना नहीं है।' हम अगर इतना समझ जाएँ कि यह धांधल किसकी है तो बस काम हो जाएगा। हमसे वह भीतर हस्ताक्षर नहीं करवा ले। कभी-कभी आपसे हस्ताक्षर करवा लेती है और आप कर भी देते हो। और फिर बाद में वह खुद को कड़वा लगता है।

प्रश्नकर्ता : हमारी बुद्धि कब अच्छी होगी?

दादाश्री : अच्छा बनाकर क्या करना है? अपने आप चली जाएगी। जब आपका उसके साथ कोई नाता ही नहीं रहा तो फिर चली ही जाएगी, लेकिन आपको उसमें हस्ताक्षर नहीं कर देने हैं। देखते ही रहना है कि बुद्धि क्या दिखा रही है।

प्रश्नकर्ता : 'हस्ताक्षर नहीं करने हैं, इसका क्या मतलब है?

दादाश्री : हस्ताक्षर नहीं करना, मतलब यह देखो न अभी आपने हस्ताक्षर कर दिए न! 'सभी पुरुष ऐसे ही होते हैं। मुझे अंदर ऐसा होता है,' ऐसा कहा कि हस्ताक्षर कर दिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चंदू ने कर दिए, मैंने नहीं।

दादाश्री : हाँ, चंदू ने कर दिए आपने नहीं, आप ऐसा जो कह रहे हो न, वह तो अभी कह रहे हो। लेकिन उस समय तो आप भी पूरी तरह से एकाकार हो गए थे। चूक गए थे, तभी ऐसा कहा, वर्ना ऐसा कोई बोलेगा ही नहीं न।

हस्ताक्षर में अभिप्राय होते ही हैं

प्रश्नकर्ता : हस्ताक्षर करना अभिप्राय देने के बराबर ही है न?

दादाश्री : नहीं, हस्ताक्षर में अभिप्राय होते ही हैं, इसलिए तब एकाकार हो जाता है। और फिर बाद में उसकी जागृति आने में बहुत टाइम लगता है। इसलिए अब इस बुद्धि से कहना कि जल्द से जल्द चली जा। प्रोफिट एन्ड लॉस दिखाती है, तो हमें तो प्रोफिट भी नहीं चाहिए और लॉस की भी नहीं पड़ी है कहीं से भी। अब सिर्फ अपनी बुद्धि को ज़रा दूर बिठा दो।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि एक तो दु:खी करती है, शुद्धात्मा का ध्यान भुलवा देती है, दादा भगवान के असीम जय-जयकार भुलवा देती है और दु:खी-दु:खी कर देती है।

दादाश्री : कितना नुकसान करवाती है।

प्रश्नकर्ता : बहुत नुकसान करवाती है।

दादाश्री : और लोगों को, दूसरों को शुद्ध देख रहे हों तो उतना भी नहीं देखने देती।

प्रश्नकर्ता : हाँ, उतना भी नहीं देखने देती। इसलिए उसके भी प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे न?

दादाश्री : हाँ, और फिर प्रतिक्रमण करने हैं फिर से कपड़ों को धोते रहने हैं।

इफेक्ट में हस्ताक्षर हो जाना, वह भी इफेक्ट?

प्रश्नकर्ता : हमें अलग-अलग बातों में, पुराने माल के आधार पर हमारे प्रतिभाव तो होते ही हैं न कि 'यह व्यक्ति परेशान कर रहा है।' अब उन प्रतिभावों पर हस्ताक्षर तो हो ही जाते हैं न?

दादाश्री : वे तो होंगे ही, उसमें भी हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : बाद में यदि हमें ज्ञान हाज़िर रहे, तो हम वे हस्ताक्षर वापस ले लेते हैं या फिर शाम को प्रतिक्रमण करते हैं। लेकिन अगर ऐसा मनमें रहा कि 'वह व्यक्ति परेशान कर रहा है,' तो अब वह चार्जिंग में आ जाएगा या नहीं, फिर यदि हमने प्रतिक्रमण नहीं किया अथवा वापस नहीं लिया तो?

दादाश्री : कुछ भी चार्ज-वार्ज नहीं होगा। यदि वह खुद ऐसा कहे कि, 'नहीं, मैं चंदूभाई ही हूँ', तभी चार्ज होगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर मुझे किसी ने थप्पड़ मारा तो उस वक्त क्षणभर के लिए तो ऐसा असर हो ही जाता है न कि 'मैं चंदूभाई हूँ।'

दादाश्री : ऐसा कुछ होता ही नहीं है, वह सब इफेक्ट है। यह जितना भी आप बोल रहे हो न वह सारा इफेक्ट है। इस जगत् में जो कुछ भी देखने में आता है, सुनने में आता है, वह सब इफेक्ट है। व्याख्यान करते हैं वह भी इफेक्ट है, सुननेवाले भी इफेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है, लेकिन हम उस इफेक्ट में हस्ताक्षर कर देते हैं न!

दादाश्री : हाँ, हस्ताक्षर कर देते हो, वह भी इफेक्ट है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, फिर छूटेंगे कैसे?

दादाश्री : छूट ही गए हो, लेकिन आपको तो मन में वहम हो जाता है कि यह क्या हो गया? किसी को जो लड्डू-जलेबी की इच्छा होती है, वह भी इफेक्ट है। आँख से दिखाई देनेवाला, कान से सुनाई देनेवाले वगैरह सभी इफेक्ट ही है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हर एक इफेक्ट में कॉज़ को पहचानेंगे तभी हमारे नए कॉज़ ठीक से डलंगे न?

दादाश्री : नहीं। नए कॉज़ तो आपके बंद कर दिए हैं, लेकिन आप जान-बूझकर यह सब चित्रित करो उसमें कोई क्या कर सकता है?

बुद्धि नहीं रहेगी तब!

जो बुद्धि नम्रता की ओर ले जाए और जो बुद्धि सरलता की ओर ले जाए, ऐसी दोनों बुद्धि काम निकाल देगी। लेकिन बुद्धि का स्वभाव कैसा है कि नम्रता की ओर नहीं ले जाती। लेकिन यदि ऐसे कुछ अच्छे संस्कार पड़े हुए हों तो वे ले जाते हैं। वर्ना बुद्धि नम्रता की ओर नहीं ले जाती। मैं, मैं, मैं, मैं, ऐसे ले जाती है। मैं में ले जाती है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर नम्रतावाली और सरलतावाली बुद्धि यदि उपकारी हो तो ऐसी बुद्धि भी काम की तो है न?

दादाश्री : वह काम की है तभी तो रही है।

काम की नहीं होगी तो चली जाएगी। मुझे किसी काम की नहीं लगी इसलिए चली गई। आपको जब तक उसका काम है तब तक रहेगी।

आपको ज्ञान हुआ है, लेकिन वह आपके आत्मा का, 'आप कौन हो' उतना ही ज्ञान हुआ है। अब जैसे-जैसे बुद्धि का महत्व कम होता जाएगा, बुद्धि का इस्तेमाल नहीं होगा, त्यों-त्यों अहंकार विलय होता जाएगा। अहंकार विलय हो जाए तो पूरा केवलज्ञान दिखाई देगा।

ज्ञानी का अंत:करण

प्रश्नकर्ता : आप्तसूत्र में वाक्य है।

''ज्ञानी नुं अंत:करण केवी रीते काम करतुं हशे?! 'पोते' खसी जाय तो अंत:करणथी आत्मा जुदो ज छे।'' यह समझाइए।

''ज्ञानी का अंत:करण किस प्रकार से काम करता होगा? 'खुद' यदि हट जाए तो अंत:करण से आत्मा अलग ही है।''

दादाश्री : आत्मा जुदा हो जाए तो सांसारिक कार्य अंत:करण से चलते रहेंगे। जुदा करने के बाद ज्ञानी का अंत:करण खुद ही स्वाभाविक काम करता रहता है।

अंत:करण एक ओर संसार कार्य करता है और एक ओर आत्मा, आत्मा का कार्य करता है। 'ज्ञानी' की तरफ से दखल नहीं होती।

अंत:करण किसे कहते हैं? कि जिसमें से कर्त्ता भाव उत्पन्न होता है, 'मैं कुछ कर रहा हूँ' ऐसा भाव उत्पन्न होता है। इस अंत:करण से 'ज्ञानी' अलग रहते हैं। यह 'ज्ञान' देने के बाद आपमें 'रियली' कर्ताभाव नहीं रहा है, लेकिन 'रिलेटिवली' कर्ताभाव रहा है। यानी कि 'डिस्चार्ज' कर्ताभाव रहा है। लेकिन आपको अभी तक अंदर थोड़ी दखल रहती है और 'ज्ञानीपुरुष' में वह दखल नहीं रहती। 'खुद' हट जाते हैं। क्योंकि दखल बंद हो गई न, इसलिए अंत:करण का कार्य अच्छे से अच्छा और जहाँ पर ज़रूरत हो वहीं पर होता है और लोगों के लिए उपयोगी होता है। आत्मा जुदा पड़ जाए तो सांसारिक कार्य अंत:करण से चलते रहते हैं, उसी को कहते हैं सहज!

जब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार हर समय हाज़िर ही रहते हैं तो उससे संपूर्ण जागृति रहती है। वीतराग ही रहते हैं। अब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सबकुछ हों, और 'खुद' उसमें जागृत ही रहे कि 'यह' वह है और 'यह' हम है, 'यह' वह है और 'यह' हम है। और संपूर्ण वीतराग भाव से रहें। ज्ञानी का अंत:करण शुद्धात्मा जैसा ही हो जाता है अर्थात् दूसरों को ऐसा ही लगता है कि यह तो भगवान जैसे आदमी हैं! बाकी जिसमें दखल रही है, उसे लोग भगवान के रूप में नहीं स्वीकार करते। और जिसका अंत:करण साफ हो जाए वह भगवान बन जाता है, यहीं पर भगवान!

- जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रीओं के सत्संग
(केवल बहनों के लिए, रजिस्ट्रेशन आवश्यक)

अमरावती **दिनांक : 13 जुलाई समय :** सुबह 10 से 5 **रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9823592668
स्थल : होटेल ग्रेस ईन, राजपथ पुलिस स्टेशन के पास, अमरावती.

अमरावती **दिनांक : 14 जुलाई समय :** सुबह 9-30 से 7-30 **रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9823592668
स्थल : दादा भगवान परिवार सत्संग सेन्टर, मोटे कम्पाउन्ड.

बेंगलोर **दिनांक : 17-18 जुलाई** **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 080-23325545

दादावाणी

पाली **दिनांक : 19-20 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 7737388197
स्थल : मेवाडा समाज भवन, रजत विहार कोलोनी, कोलेज रोड.

पूणे **दिनांक : 22-24 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9370022022
स्थल : होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर कोर्नर के पास, मार्केट यार्ड, पूणे.

जालंधर **दिनांक : 24-25 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9814063043
स्थल : राजलक्ष्मी, 1236 अर्बन एस्टेट फेज-1, सीमंधर सिटी, जालंधर.

कोलकाता **दिनांक : 24-25 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 033-32933885
स्थल : कामानी जैन भवन, 3A रे स्ट्रीट, कोलकाता.

ईंदौर **दिनांक : 26-27 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9893545351
स्थल : श्रीजी एवन्यु, (पुराना धाधु भवन), 63-कैलाश मार्ग, मल्हर्ष गंज, अंतिम चौराहे के पास.

भिलाई **दिनांक : 27-28 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9827874148
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास.

भोपाल **दिनांक : 28-29 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9425023328
स्थल : जनकविहार कोम्प्लेक्ष, एयरटेल ओफिस के सामने, मालवियानगर.

जबलपुर **दिनांक : 30 जुलाई** **समय और रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क :** 9425385656
स्थल : होटेल समदरिया ईन, रसैल चौक, जबलपुर.

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

गुवाहाटी **दिनांक : 5 जुलाई** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9854047685
स्थल : लक्ष्मी बिबाह भवन, लक्ष्मी पथ, बेलटोला टीनीआली, गुवाहाटी.

गुवाहाटी **दिनांक : 6 जुलाई** **समय :** शाम 4-30 से 6-30 **संपर्क :** 9854047685
स्थल : श्री गुजरात वेल्फेर सोसाइटी, इलेक्ट्रीसीटी बोर्ड के पास, फाटासील अंबारी.

कटिहार **दिनांक : 7 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9931825351
स्थल : मनोकामना दुर्गा मंदिर, लाल कोठी रोड, कटिहार.

सहरसा **दिनांक : 8 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9534797720
स्थल : माँ दुर्गा मंदिर, गाँव तेघड़ा, पोस्ट-बलही, तेघडा, सहरसा.

आरा **दिनांक : 9 जुलाई, समय :** शाम 5 से 7 **स्थल की जानकारी के लिए संपर्क :** 9471000240

पटना **दिनांक : 10 जुलाई** **समय :** शाम 5-30 से 7-30 **संपर्क :** 9471000240
स्थल : I.M.A. बिल्डींग, साउथ गांधी मैदान थाने के पास, सुभाष पार्क के पास.

कोलकाता **दिनांक : 13 जुलाई** **समय :** सुबह 9-30 से 6-30 **संपर्क :** 9330333885
स्थल : लक्ष्मीनारायण मंदिर, 42, सरत बोस रोड, लेंसडाउन रोड, पद्मपूकूर, कोलकाता.

कोलकाता **दिनांक : 14 जुलाई** **समय :** शाम 6 से 8-30 **संपर्क :** 9831852764
स्थल : डायमंड सिटी साउथ, 58, एम.जी. रोड, करुणामई ब्रीज के पास, कोलकाता.

कोलकाता **दिनांक : 15 जुलाई, समय :** शाम 6 से 8-30 **स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9330333885

टाटानगर **दिनांक : 16-17 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 7 **संपर्क :** 9709220292
स्थल : भाईचंद क्वार्टर्स, जलाराम मंदिर, कोंट्रेक्टर एरिया, रोड नं. 2, उदानी जैन भवन के पास.

नागपुर **दिनांक : 18 जुलाई** **समय :** शाम 6-30 से 8-30 **संपर्क :** 9970059233
स्थल : कच्छी विशा ओशवाल समाज, 57/58, अनाथ विद्यार्थी गृह लेआउट, लकड़गंज.

गुजरात के अलावा विभिन्न सत्संग केन्द्रों में आयोजित गुरुपूर्णिमा का कार्यक्रम

सेन्टर		समय	कार्यक्रम का पता	
जलंधर	(१३ जुलाई)	सुबह 10 से 1-30	हाउस नं. 1236, अर्बन एस्टेट, फेझ-1.	9814063043
गुड़गाँव	(१३ जुलाई)	सुबह 10 से 12-30	Q-349A, साउथ सिटी-1, गुड़गाँव.	9810307602
दिल्ली	(१३ जुलाई)	सुबह 10 बजे से	लौरेल हाईस्कूल, शिवा मार्केट के सामने.	9810098564
गाज़ियाबाद	(१२ जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	हाउस नं. 227, सेक्टर-17, ब्लोक-'ई', कोनार्क एवन्यु, वसुंधरा.	9968738972
चंडीगढ़	(१२ जुलाई)	शाम 5 से 8	सनातन धर्म मंदिर, सेक्टर-32	9872188973
जयपुर	(१२ जुलाई)	दोपहर 3 से 6	विनोभा ज्ञान मंदिर, युनीर्वसिटी मार्ग, बापुनगर	9785891606
पाली	(१२ जुलाई)	शाम 4-30 से 7-30	मेवाडा समाज भवन, रजत विहार कोलोनी	9461251542
मुज़फ्फरपुर	(१३ जुलाई)	शाम 6-30 से 9-30	एट-गोपालपुर तारापुरा, पो-प्रहलादपुर	9608030142
पटना	(१२ जुलाई)	सुबह 11 से शाम 5	ओशवाल समाज, नारायण प्लाझा. एक्सिबिशन रोड.	9471000240
धनबाद	(१३ जुलाई)	शाम 6 से 8	आर.के. एपार्टमेन्ट, पहली मंजिल, रिलायन्स फ्रेस के पीछे, कटरास रोड.	9431191375
कोलकाता	(१३ जुलाई)	सुबह 10 से शाम 6-30	लक्ष्मीनारायण मंदिर, शरत बोस रोड.	033-32933885
इन्दौर	(१३ जुलाई)	शाम 4 से 8	कच्छी जैन धर्मशाला, 97, स्नेहलता गंज, भंडारी ब्रीज के पास.	9039936173
भोपाल	(१३ जुलाई)	सुबह 10 से शाम 4-30	जनकविहार कोम्प्लेक्ष, मालवियानगर.	9425676774
जबलपुर	(१२ जुलाई)		समय और स्थल की घोषणा बाकी.	9425160428
रायपुर	(१२ जुलाई)	शाम 4 से 8	बाल आश्रम रोड, डागा कोलेज परिसर	9329644433
भिलाई	(१२ जुलाई)	शाम 4 से 6	दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोदा वोटर टेन्क के पास.	9827481336
मुंबई	(१२ जुलाई)	शाम 4 से 8	हालारी विसा ओशवाल समाज वाडी, रणजीत स्टुडियो के सामने, दादासाहेब फालके रोड, दादर (से.रे.)	9323528901
पूणे	(१२ जुलाई)	सुबह 10-30 से 3-30	होटल गोल्डन एमरल्ड, महर्षिनगर के पास	9422660497
औरंगाबाद	(१३ जुलाई)	शाम 4 से 8	"निमिषा बंगलो', पेंडकर होस्पिटल के सामने, जुबली पार्क चौक के पास, पुलीस कमिश्नर रोड.	8308008897
नागपुर	(१३ जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	कच्छी विशा भवन, छापरु नगर, अनाथ विद्यालय पास	9970059233
जलगाँव	(१३ जुलाई)	शाम 4 से 7	लाज भुवन, प्लोट नं-51, विवेकानंद नगर, जिलापेठ, श्री फोटो के पास.	9420942944
अमरावती	(१२ जुलाई)	सुबह 9 से 1	दोशी वाडी, गुलशन पावर पास, जय स्तंभ चौक.	9403411401
हुबली	(१३ जुलाई)	सुबह 9-30 से 1	एन.के. सभागृह, केशवपुर.	9343401229
बेंगलोर	(१३ जुलाई)	शाम 4 से 7	डी.वी.वी. गुजराती हाईस्कूल, अपारपेट पुलीस स्टेशन के पास, मेजेस्टिक सर्कल.	9590979099
हैदराबाद	(१२ जुलाई)		समय और स्थल की घोषणा बाकी.	9989877786
चेन्नई	(१२ जुलाई)	शाम 3 से 6	केन्ट एपार्ट. बी-7, 26 रीथर्डन रोड.	9380159957

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

११-१३ अप्रैल: इस साल जर्मनी में नए मुमुक्षुओं के लिए फेन्क्रफर्ट के पास विलिंगन में अक्रम विज्ञान इवेन्ट का आयोजन हुआ। यह जगह सुविधाजनक और नैसर्गिक वातावरण से भरपूर थी। यूरोप और अन्य कई देशों के मुमुक्षुओं ने भाग लिया। रिट्रीट से पहले जब पूज्यश्री इन्फॉर्मल सेशन में पुराने महात्माओं से मिले, तब जर्मन महात्माओं ने ज्ञान के सुंदर और आश्चर्यजनक अनुभव बताए। यहाँ पर २५० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। और लगभग २०० पुराने महात्मा जर्मनी, स्विट्ज़रलैन्ड और ऑस्ट्रिया से आए थे। रविवार के दिन पूज्यश्री के दर्शन, श्री सीमंधर स्वामी की १४० प्रतिमाओं की विधि, भक्ति-गरबा, पिकनिक का कार्यक्रम हुआ और केबल कार से पूज्यश्री महात्माओं के साथ 'मानसरोवर' जैसी जर्मनी की एक लेक पर गए। पहली बार 'साइन्स ऑफ कर्मा' पुस्तक पर अंग्रेजी में दो दिन का पारायण जर्मनी में हुआ। पूज्यश्री ने महात्माओं को कर्म की थ्योरी पर उद्भवित प्रश्नों के विविध उदाहरण देकर सटीक जवाब दिए। सेवार्थी महात्माओं के लिए विशेष सत्संग भी हुआ और महात्माओं ने भक्ति और आरती भी की। रिट्रीट के बाद पूज्यश्री फेन्क्रफर्ट के चर्च में गए और प्रार्थना की कि तमाम इसाई भी आत्म साक्षात्कार पाएँ। पूज्यश्री ने ईसा मसीह को क्रोस पर चढ़ाए जानेवाली तस्विरें तथा शिल्पकृतियाँ देखीं।

१७-२१ अप्रैल : यू.के. के महात्माओं के लिए हर साल की तरह इस साल भी पेकफील्ड में शिविर का आयोजन हुआ, जिनमें लगभग ७५० महात्माओं ने भाग लिया। शिविर में लगभग १५० महात्मा पहली बार और अन्य देश से लगभग १०० महात्मा आए थे। शिविर में 'अहिंसा' पुस्तक पर पारायण हुआ तथा 'आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप,' 'पहले वीतद्वेष फिर वीतरागता', इन विषयों पर विशेष सत्संग हुआ। शिविर में यू.एस.ए., भारत, आफ्रीका, सिंगापुर से भी महात्मा आए थे। नए महात्मा पूज्यश्री को व्यक्तिगत तौर पर मिल सकें उसके लिए 'दादा दरबार' का एक दिन का विशेष कार्यक्रम भी आयोजित हुआ। MMHT, WMHT, युवकों, बच्चों, ब्रह्मचर्य इत्यादि ग्रुप के सत्संग का भी आयोजन हुआ।

२५-२७ अप्रैल : स्पेन में पूज्यश्री ने दो दिन स्थानीय महात्माओं के साथ इन्फॉर्मल रूप से समय गुज़ारा, जिसमें पूज्यश्री ने महात्माओं के साथ स्पेन के सदियों पुराने दो शहर टोलेडो और सिगोविआ और साथ ही ऐतिहासिक स्मारकों और चर्चों को भी देखा। टोलेडो में पूज्यश्री विश्व के दूसरे नंबर के सबसे बड़े चर्च को भी देखने गए। इस दौरान सभी महात्माओं ने भक्ति और गरबा किया। मेड्रिड में ज्ञानविधि में २९० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। ब्राज़ील से ४० लोग खास तौर पर आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए आए थे, जिन्हें पिछले साल ब्राज़ील से सीमंधर सिटी आकर ज्ञान लेकर गई एक बहन ने दादाई ज्ञान की सभी बातें बताईं और ज्ञान लेने के लिए प्रेरित किया। उन सभी लोगों ने ५८०० कि.मी. दूर से मेड्रिड आकर ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने ऐसी भावना व्यक्त की कि अगले साल पूज्यश्री ब्राज़ील आएँ। ब्राज़ीलियन महात्माओं ने पूज्य दादाश्री, पूज्य नीरू माँ तथा पूज्य दीपकभाई पर एक पद गाया, और पूज्यश्री को ब्राज़ील देश का झंडा, क्रिस्टल और माटी की भेंट अर्पण की। सत्संग के दौरान महात्माओं ने सुंदर प्रश्न पूछे और ज़्यादा जानने की उत्सुक्ता दिखाई, इसलिए और भी एक सेशन आयोजित हुआ। कई लोगों ने ज्ञान से पहले और ज्ञान के बाद के खुद के जीवन के सुंदर अनुभव कहे। इवेन्ट के दौरान महात्माओं के लिए अनुभव सेशन, दर्शन और गरबे का आयोजन हुआ।

१-८ मई : यूरोप के सत्संग प्रवास के बाद पूज्यश्री वापस भारत लौटे। मुंबई के अंधेरी क्षेत्र में GNC डे मनाया गया, जिनमें लगभग २५० लिटल और यंग MHT बच्चों और युवकों ने भाग लिया। उन्होंने सुंदर नृत्य, नाटक, संवाद और संगीत का आयोजन करते हुए संदेश दिया कि आजकल के टीनेजर्स किस तरह और कैसे प्रलोभन से खुद के ध्येय से विमुख हो जाते हैं और किस तरह दादाई ज्ञान से मोड़े जा सकते हैं। अंधेरी में हुई ज्ञानविधि में १४०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिनमें ५०० हिंदीभाषी थे।

डोंबीवली में पहली बार सत्संग-ज्ञानविधि का कार्यक्रम हुआ, जिनमें स्थानीय मुमुक्षुओं को अच्छा रिस्पॉन्स मिला। डोंबीवली में आयोजित ज्ञानविधि में ६३० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया, जिनमें २६५ हिंदीभाषी थे। मुंबई में अलग-अलग भाषा जाननेवाले मुमुक्षुओं के प्रश्नों के पूज्यश्री ने हिंदी, गुजराती, अंग्रेजी और मराठी भाषा में उत्तर दिए। हिंदीभाषी मुमुक्षुओं की संख्या अधिक होने की वजह से दोनों जगहों पर ज्ञानविधि हिंदी में हुई।

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2014

Contact no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org, for Canada - info@ca.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & Email
17-Jun	Tue	New York	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM	The Royal Regency Hotel, 165 Tuckahoe Rd, Yonkers, NY 10710	Extn. 1021 newyork@ us.dadabhagwan.org
18-Jun	Wed	New York	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
18-Jun	Wed	New York	**Gnanvidhi**	**4-30 PM**	**8-00 PM**		
19-Jun	Thu	New York	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
20-Jun	Fri	Toronto	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation (Canada), 80 Brydon dr, Etobicoke - M9W 4N	Extn. 1006 toronto@ ca.dadabhagwan.org
21-Jun	Sat	Toronto	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
22-Jun	Sun	Toronto	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
22-Jun	Sun	Toronto	**Gnanvidhi**	**2-00 PM**	**6-00 PM**		
23-Jun	Mon	Toronto	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
28-Jun	Sat	Charlotte	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM	Hindu Center Of Charlotte, 7400 City View Drive, Charlotte NC 28212	Ext. 1027 charlotte@ us.dadabhagwan.org
29-Jun	Sun	Charlotte	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
29-Jun	Sun	Charlotte	**Gnanvidhi**	**4-00 PM**	**8-00 PM**		
30-Jun	Mon	Charlotte	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
30-Jun	Mon	Jackson MS	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Agricultural Museum, 1150 Lakeland Dr, Jackson, MS 39216.	Ext. 1030 jackson@ us.dadabhagwan.org
1-July	Tue	Jackson MS	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
1-July	Tue	Jackson MS	**Gnanvidhi**	**4-30 PM**	**8-00 PM**		
2-July	Wed	Jackson MS	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
3-July	Thu	Dallas	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	D/FW Hindu Temple, Ekta Mandir, 1605 N. Britain Road, Irving, TX 75061	Ext. 1026 dallas@ us.dadabhagwan.org
4-July	Fri	Dallas	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
5-July	Sat	Dallas	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
5-July	Sat	Dallas	**Gnanvidhi**	**2-00 PM**	**6-00 PM**		
6-July	Sun	Dallas	Follow up - Aptputra	10-00 AM	12-30 PM		
8-July	Tue	St. Louis	GP SHIBIR	9-30 AM	7-00 PM	St. Louis Union Station Doubletree by Hilton Hotel, 1820 Market Street, St. Louis, MO 63103	Ext. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
9-July	Wed	St. Louis	GP SHIBIR	9-30 AM	7-00 PM		
10-July	Thu	St. Louis	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
10-July	Thu	St. Louis	**Gnanvidhi**	**4-00 PM**	**8-00 PM**		
11-July	Fri	St. Louis	General Satsang	9-30 AM	7-00 PM		
12-July	Sat	St. Louis	Guru Pujan	8-00 AM	6-30 PM		
13-July	Sun	St. Louis	GP SHIBIR	9-30 AM	12-30 PM		
18-July	Fri	San Jose	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Sunnyvale Hindu Temple, 450 Perisian Drive, Sunnyvale, CA 9408	Ext. 1024 northcalifornia@ us.dadabhagwan.org
19-July	Sat	San Jose	General Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
20-July	Sun	San Jose	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
20-July	Sun	San Jose	**Gnanvidhi**	**2-00 PM**	**6-00 PM**		
21-July	Mon	San Jose	Follow up - Aptputra	6-30 PM	9-00 PM		
22-July	Tue	Pheonix	Mahatma Satsang	6-00 PM	9-30 PM	Indo-American Community Center, 2809 West Maryland Avenue, Phoenix, AZ 85017	Extn : 1008 phoenix@ us.dadabhagwan.org
23-July	Wed	Pheonix	Aptputra Satsang	6-00 PM	9-30 PM		
24-July	Thu	Los Angeles	MHT Satsang	6-30 PM	9-00 PM	Jain Temple 8072 Commonwealth Ave, Buena Park, CA 90621	Ext. 1009 losangeles@ us.dadabhagwan.org
25-July	Fri	Los Angeles	General Satsang	6-30 PM	9-00 PM		
26-July	Sat	Los Angeles	Aptputra Satsang	10-00 AM	12-30 PM		
26-July	Sat	Los Angeles	**Gnanvidhi**	**2-00 PM**	**6-00 PM**		
27-July	Sun	Los Angeles	Follow up - Aptputra	9-30 AM	12-00 PM		

दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

पुणे

८-९ अगस्त (शुक्र-शनि) - शाम ६ से ८-३० **सत्संग** तथा **१० अगस्त** (रवि), शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : वर्धमान सांस्कृतिक केन्द्र, आई माता मंदिर के पास, गंगाधाम चौक, मार्केट यार्ड, शत्रुंजय मंदिर रोड.
संपर्क : 9422660497, 9422012794

अडालज त्रिमंदिर

१४ अगस्त (गुरु) - शाम ४ -३० से ७ - **सत्संग** तथा **१५ अगस्त** (शुक्र), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
१७ अगस्त (रवि) - रात १० से १२ - **जन्माष्टमी अब पूज्यश्री की निश्रा में अडालज में मनाई जाएगी.**
२२ से २९ अगस्त (शुक्र से शुक्र) **पर्युषण पारायण - आप्तवाणी ३** तथा **७** पर **वांचन-सत्संग-प्रश्नोत्तरी**
३० अगस्त (शनि) सुबह ९ बजे से - **दर्शन** का विशेष कार्यक्रम

पाली

६ सितम्बर (शनि) - शाम ४ से ६ - **सत्संग** तथा **७ सितम्बर** (रवि), दोपहर ३ से ६ - **ज्ञानविधि**
स्थल : अनुव्रत नगर, रामलीला मैदान के पास. **संपर्क :** 9461251542

कोलकाता

९-१० सितम्बर (मंगल-बुध) - **सत्संग** तथा **११ सितम्बर** (गुरु) - **ज्ञानविधि** (समय की घोषणा बाकी)
स्थल : विद्या मंदिर (हिन्दी हाईस्कूल), मीन्टो पार्क के पास, 1, मोईरा स्ट्रीट. **संपर्क :** 9830006376

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- **'साधना'** पर हररोज - रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - बिहार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ४ से ४-३० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)

USA - 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'सब टीवी' पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'साधना'** पर हर रोज़ - **सुबह ७-४० से ८-०५ और शाम ७-१० से ७-४०** (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन-नेशनल'** पर हर मंगलवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर हर रोज़ दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA - 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST

USA-UK - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

जून २०१४
वर्ष-९ अंक-८
अखंड क्रमांक - १०४

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

पार्लियामेन्टरी पद्धति, अंत:करण में...

यहाँ से बाहर निकलें तो मन में पहले विचार आता है कि 'टैक्सी में जाएँ या फिर स्टेशन यहाँ नज़दीक ही है, पैदल जाएँ? नज़दीक है इसलिए बेकार दो रूपये क्यों खर्च करें?' फिर दूसरा विचार करता है कि नहीं, 'बस में चलो न!' फिर तीसरा विचार करता हैं कि 'नहीं, बस की बजाय टैक्सी लेकर जाएँ तो हम सभी साथ में बैठकर जा पाएँगे।' यानी कि मन सबकुछ सोच लेता है कि ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा। तब चित्त वहाँ जाकर सबकुछ देख आता है। चित्त का स्वभाव सभी कुछ देखने का है। फिर जो नफा-नुकसान देखती है, वह बुद्धि है। कहाँ पर मुझे ज़्यादा फायदा मिलेगा और नुकसान नहीं हो, ऐसा देखना वह बुद्धि का काम है। अंत में बुद्धि निर्णय लेती है कि यह सही या वह सही है? तब फिर अंत में बुद्धि कहती है कि 'टैक्सी में जाएँगे।' जिसने निर्णय ले लिया, वह बुद्धि है। तब बाकी के सब चुप। मन, चित्त और अहंकार निर्णय नहीं दे सकते। बुद्धि ने निर्णय दिया कि अहंकार तुरंत ही हस्ताक्षर कर देता है। अहंकार के हस्ताक्षर लेंगे तभी काम होगा। ऐसे अंदर पूरी पार्लियामेन्टरी पद्धति चल रही है।

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.